mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-60 | पृष्ठ-8 | मूल्य-3 रूपये

सतना

02 मार्च 2025 रविवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

न्यूजीलैंड के खिलाफ...

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

छात्रों को गणित में कुशल बनाने के लिए शुरू करेंगे मुफ्त योजना

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक और उनकी पत्नी अक्षता मूर्ति छात्रों को गणित विषय में निपुण बनाने के लिए एक मुफ्त योजना की शुरुआत करने जा रहे हैं। सुनक दंपत्ति ने शनिवार को ऐलान किया कि वे इंग्लैंड में बच्चों और युवाओं में गणित कौशल को निखारने पर केंद्रित एक नयी परोपकारी संस्था शुरू करने की योजना बना रहे हैं।

'रिचमंड प्रोजेक्ट' की शुरुआती इस साल के अंत में की जाएगी। बता दें कि पिछले साल सुनक के '10 डाउनिंग स्ट्रीट' छोड़ने के बाद से 44 वर्षीय दंपती की यह पहली बड़ी संयुक्त परियोजना है और इसका उद्देश्य स्कूली बच्चों को गणित विषय में आत्मविश्वासी बनाने में मदद करना है। सुनक ने सोशल मीडिया पर घोषणा की, ''इस साल के अंत में अक्षता और मैं 'रिचमंड प्रोजेक्ट' की शुरुआत करेंगे - एक नयी परोपकारी संस्था जो गणित विषय में सुधार पर केंद्रित है।'' उन्होंने कहा, ''गणित को लेकर आत्मविश्वास जीवन को बदल देता है। सुनक की यह योजना छात्र-छात्राओं के लिए वरदान साबित हो सकती है। गणित विषय में निपुणता आत्मविश्वास को बढ़ाता है। यह संभावनाओं के अवसर खोल देता है, सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देता है और लोगों को आगे बढ़ने में मदद करता है। लेकिन अभी, बहुत से लोग संघर्ष कर रहे हैं। जल्द ही और भी बहुत कुछ आने वाला है।'' अक्षता मूर्ति ने सोशल मीडिया मंच 'इंस्टाग्राम' पर पोस्ट कर कहा कि यह परोपकारी संस्था शिक्षा की ताकत के प्रति उनकी साझा अभिलाषा को दर्शाता है। इससे तरक्की के रास्ते खुल जाते हैं।

पंजाब प्रांत में एक साथ गिरफ्तार किए 20 आतंकी

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के हाथ बड़ी कामयाबी लग गई है। पाकिस्तानी कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से कथित तौर पर जुड़े एक सिख व्यक्ति समेत 20 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पंजाब पुलिस के आतंकवाद निरोधक

विभाग (सीटीडी) के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि कानून प्रवर्तन अधिकारियों ने इस सप्ताह पंजाब के विभिन्न इलाकों में खुफिया सूचना पर आधारित 162 अभियानों के दौरान 20 टीटीपी आतंकवादियों को गिरफ्तार करके एक बड़ी आतंकी योजना को विफल कर दिया। बयान में कहा गया, ''टीटीपी के तीन बेहद खतरनाक सदस्य - मनमोहन सिंह, नकीबुल्लाह और रियाज को क्रमशः रावलपिंडी, लाहौर और रहीम यार खान से गिरफ्तार किया गया।'' बयान के अनुसार गिरफ्तार किए गए आतंकवादियों के कब्जे से भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार बरामद किया गया है। इनमें 6,238 ग्राम विस्फोटक, 23 डेटोनेटर, 61 फुट लंबा सेफ्टी फ्यूज वायर, तीन आईईडी बम और प्रतिबंधित साहित्य बरामद किया। बयान में कहा गया है, ''उनकी योजना लाहौर और अन्य शहरों में महत्वपूर्ण इमारतों को निशाना बनाने की थी। गिरफ्तार आतंकवादियों के खिलाफ 18 मामले दर्ज किए गए हैं और आगे की जांच जारी है।''

रेलवे स्टेशन पहुंचे राहुल गांधी, कुलियों से की मुलाकात

मंडी (एजेंसी)। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने आज नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कुलियों से मुलाकात की। राहुल गांधी से मुलाकात के बाद कुली दीपेश मीना ने कहा, हमें खुशी है कि राहुल गांधी हमसे मिलने आए। उन्होंने हमारी सभी समस्याएं सुनीं और हमें उम्मीद है कि वे उनका समाधान करेंगे। वे यहां करीब 40 मिनट तक रुके और हमारी बातें सुनीं।÷ बता दें कि इससे पूर्व राहुल गांधी ने ट्रक डाइवरों और किसानों से मुलाकात की थी। दरअसल लोकसभा चुनाव से पहले राहुल गांधी ट्रक ड्राइवरों से मुलाकात की उनकी तकलीफ को जाना था। वहीं किसानों के साथ उन्होंने खेत में उतरकर फसल भी लगाई थी।

5 की तलाश अभी भी जारी

उत्तराखंड में हिमस्खलन से बचाए गए 50 मजदूरों में से 4 की मौत

चमोली (एजेंसी)। उत्तराखंड में चमोली जिले के माणा गांव स्थित सीमा सड़क संगठन यानी कि बीआरओ के कैंप में हिमस्खलन के कारण कई फुट बर्फ के नीचे फंसे श्रमिकों में से 4 की मौत हो गई है। इस भीषण आपदा से प्रभावित 55 में से कुल 50 मजदूरों को ढूंढ निकाला गया था और 5 की तलाश अभी भी जारी है। जिन 50 मजदूरों को निकालने में कामयाबी मिली थी दुर्भाग्य से उनमें से 4 मजदूरों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। सेना के अधिकारियों ने जानकारी दी है कि फंसे हुए बाकी 5 श्रमिकों को निकालने के लिए शनिवार को फिर से बचाव अभियान शुरू किया गया।

सेना के मुताबिक, शुक्रवार को सुबह 5¬30 से 6 बजे के बीच हुए हिमस्खलन के कारण माणा और बदरीनाथ के बीच में स्थित बीआरओ का कैंप बर्फ में समा गया था जिससे 8 कंटेनर और एक शेड में 55 मजदूर फंस गए थे। शुक्रवार को बारिश और बर्फबारी के कारण रेस्क्यू ऑपरेशन में रुकावट पैदा हुई और रात में

अभियान को कुछ देर के लिए रोक दिया गया। शनिवार को मौसम साफ होने पर बचाव अभियान में हेलीकॉप्टर की भी मदद ली गई। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रभावित क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण किया और अधिकारियों को रेस्क्यू ऑपरेशन में तेजी लाने का निर्देश दिया।

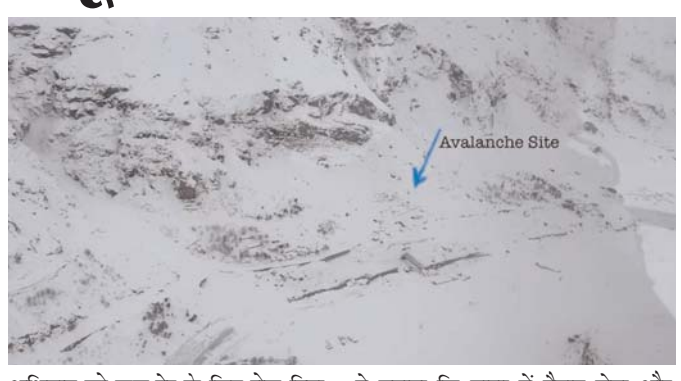

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सीएम धामी से बात की और उन्हें पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी एन. के. जोशी ने बताया कि माणा में तैनात सेना और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस यानी कि आईटीबीपी के जवानों ने सुबह बचाव अभियान फिर से शुरू किया। बचाए गए श्रमिकों में से कुछ लोगों की हड्डी टूट गई है जबकि अन्य को मामूली चोटें आई हैं। चमोली के जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने बताया कि सेना के हेलीकॉप्टर ऑपरेशन में जुटे हुए हैं और अगर मौसम ठीक रहा तो हम जल्द ही शेष श्रमिकों का पता लगा लेंगे।

एमपी के किसानों के लिए खुशखबरी, गेहूं के समर्थन मूल्य पर 175 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देगी सरकार

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने किसानों को खुशखबरी दी है। मध्य प्रदेश सरकार साल 2025-26 में गेहूं को 2600 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीदेगी। खाद्य मंत्री गोविंद राजपूत ने डॉ. मोहन यादव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूरे प्रदेश में गेहूं की खरीद 15 मार्च से शुरू हो जाएगी। खाद्य मंत्री गोविंद राजपूत ने कहा कि गेहूं की फसल की कटाई पूर्ण नहीं होने और मंडियों में आ रहे गेहूं को भारत सरकार द्वारा निर्धारित नमी के प्रतिशत से अधिक होने के कारण किसानों को असुविधा से बचाने के लिए यह निर्णय सरकार द्वारा लिया गया है। किसानों को मध्य प्रदेश सरकार देगी 175 रुपये बोनस देगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली किसान हितैषी प्रदेश सरकार द्वारा गेहूं उत्पादक किसानों के हित में बड़ा और ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए समर्थन मूल्य 2425 रूपये के अतिरिक्त 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा की गई है। राज्य के किसानों से 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी की जायेगी।

... उनके पूर्वजों में से किसी ने आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी

ओवैसी ने सीएम योगी पर साधा निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा, योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उर्दू पढ़ने से साइंटिस्ट नहीं बनते, कठमुल्ले बनते हैं। लेकिन योगी के पूर्वजों में से किसी ने आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी। योगी ने तो उर्दू नहीं पढ़ी फिर वो साइंटिस्ट क्यों नहीं बने? ये आरएसएस के लिए है कि आर्यन्स भी बाहर से आए। कोई यहां से है तो वो ट्राइबल्स और द्रविड़ियंस ही हैं। ओवैसी ने कहा, योगी को नहीं मालूम है कि उर्दू देश की आजादी की जुबान है। बीजेपी एक मजहब, एक जुबान, एक तहजीब, एक लीडर के तौर पर ही देखती है। ओवैसी ने ये भी कहा कि फलस्तीन के लिए और गाजा के लोगों के लिए रमजान में दुआ करो। असदुद्दीन ओवैसी के भाई अकबरुद्दीन ओवैसी का भी बयान सामने आया है और उन्होंने अपने भाई असदुद्दीन की तारीफ की है। अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहा, क्या कोई है इतनी जरूरत करने वाला, बेबाकी से आपकी बात करने वाला। सीएए हो या एनआरसी हो, वक्फ बिल हो या गिरफ्तारियां हों, वो लड़ रहा है, मुकाबला कर रहा है, आपकी

आवाज बुलंद कर रहा है। यहां अपनी बात रखना अलग बात है लेकिन वहां दुश्मनों के सामने खड़े होकर अपनी आवाज उठाने की हिम्मत सिर्फ असदुद्दीन ओवैसी में है। इससे पहले भी ओवैसी सीएम योगी पर निशाना साध चुके हैं। ओवैसी ने कहा था कि भारत सरकार खुद भारतीयों को सलाह दे रही है कि वे इजराइल की यात्रा न करें। यह तो भाजपा के राज्य और केंद्रीय सरकारों की नाकामी का ठोस सबूत है कि मजबूर गरीब लोगों को इजराइल जैसी जगह काम पर जाना पड़ रहा है। अगर यहां रोजगार के अवसर होते तो कोई इजराइल मजदूरी करने क्यों जाता? योगी जितना चाहे उतनी इजराइल की भक्ति कर लें, लेकिन अभी भी भारत को सबसे ज्यादा रेमिटेंस अरब देशों से ही आता है।

दिल्ली सहित अन्य राज्यों में बरसेंगे बादल

तूफान के साथ भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में शुक्रवार की सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और हल्की बारिश हुई, वहीं शनिवार की सुबह की शुरुआत भी रिमझिम बारिश के साथ हुई है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई राज्यों में बारिश की चेतावनी जारी की गई है। कभी धूप से गर्मी और कभी बारिश से ठंड के बीच मौसम में उतार-चढ़ाव जारी है। आईएमडी के अनुसार, दिल्ली का न्यूनतम तापमान गिरकर 17 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की उम्मीद है, जबकि अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। कई राज्यों में आंधी तूफान के साथ बारिश की भविष्यवाणी की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने पूर्वोत्तर भारत, खासकर असम और पड़ोसी राज्यों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। ऐसा बंगाल की खाड़ी के ऊपर विकसित हो रहे चक्रवाती परिसंचरण के कारण हो रहा है। अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा

जैसे राज्यों में हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है, साथ ही कुछ क्षेत्रों में भारी वर्षा होने की भी संभावना है। दो मार्च से एक नए पश्चिमी विक्षोभ के उत्तर पश्चिम भारत को और अधिक प्रभावित करने की उम्मीद है। वहीं मौसम विभाग के मुताबिक एक पश्चिमी विक्षोभ उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों को भी प्रभावित कर रहा है। इसकी वजह से जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, गिलगित-बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद में बारिश और बर्फबारी होने की उम्मीद है। वहीं, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में भी हल्की बारिश हो सकती है। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भी बारिश और बर्फबारी होने की संभावना है। इसके अलावा, पंजाब और हरियाणा में अलग-अलग जगहों पर ओलावृष्टि की भी आशंका है। वहीं दक्षिणी और मध्य भारत के राज्यों की बात करें तो तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में वर्षा होने की संभावना है। इनमें से कुछ क्षेत्रों में बाढ़ और भूस्खलन की संभावना के साथ भारी से बहुत भारी वर्षा की चेतावनी है। गंगीय पश्चिम बंगाल, ओडिशा और झारखंड में हल्की बारिश और गरज के साथ बारिश होने की संभावना है।छत्तीसगढ़ में भी हल्की बारिश होने की संभावना है।

अब तक 65 आरोपियों की जमानत याचिका हुई खारिज

उत्तर प्रदेश के संभल जिले में हिंसा का मामला

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल जिले की एक अदालत ने पिछले साल 24 नवंबर को हुई हिंसा के 17 आरोपियों की जमानत याचिका खारिज कर दी है। इसके साथ ही अब तक 65 आरोपियों की याचिका खारिज हो चुकी है। एक शासकीय अधिवक्ता ने शनिवार को यह जानकारी दी। अपर जिला शासकीय अधिवक्ता हरि ओम प्रकाश सैनी ने बताया कि अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश निर्भय नारायण राय ने शुक्रवार को संभल हिंसा मामले में 17 आरोपियों की जमानत याचिका खारिज कर दी। इसके पहले गुरुवार को ऐसी 18 जमानत याचिकाएं खारिज कर दी थीं।

हरि ओम प्रकाश सैनी ने बताया कि इस मामले में अब तक 65 जमानत याचिकाएं खारिज हो चुकी हैं, शेष याचिकाओं पर अन्य तारीखों पर सुनवाई होनी है। सैनी ने कहा, %हमने माननीय न्यायालय के समक्ष

दलीलें पेश कीं कि 24 नवंबर की घटना में चार निर्दोष लोगों की जान गई है। इन आरोपियों ने पुलिसकर्मियों की हत्या करने की नीयत से ऐसे साधनों का इस्तेमाल किया, जिसमें पथराव भी शामिल था, गोलीबारी भी की गई।

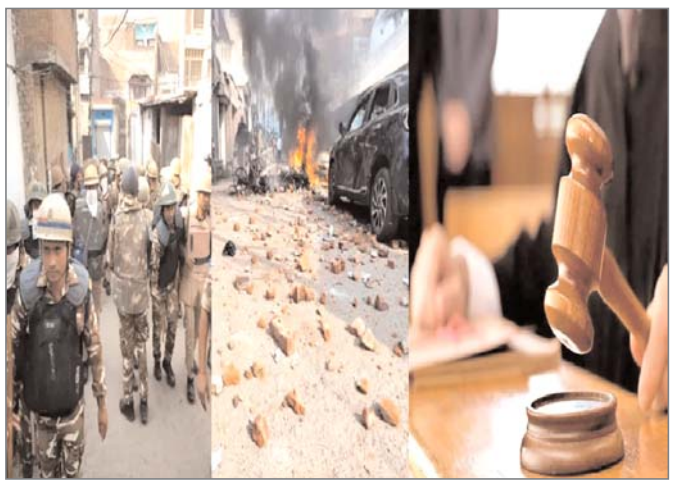

सैनी ने कहा, पुलिस ने वीडियो फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान कर ली है। उनके पास से गोलियां और अन्य सामान भी बरामद किया गया है। ये सभी दलीलें मैंने अदालत में पेश कीं, जिसके आधार पर कल और परसों की सभी जमानत याचिकाएं माननीय अदालत ने खारिज कर दीं। उन्होंने बताया कि इस मामले में जमानत के लिए 87 याचिकाएं दायर की गई थीं, जिनमें से अब तक 65 याचिकाएं अदालत ने खारिज कर दी हैं और बाकी अन्य सुनवाई के लिए लंबित हैं।

पिछले साल 19 नवंबर से संभल में तनाव व्याप्त था, जब अदालत के आदेश पर शाही जामा मस्जिद का सर्वेक्षण किया गया था। ऐसा दावा किया गया था कि उस स्थान पर पहले एक हरिहर मंदिर था। दूसरे सर्वेक्षण के दौरान 24 नवंबर को विरोध कर रहे स्थानीय लोगों की सुरक्षाकर्मियों से झड़प हो गई, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई और दर्जनों लोग घायल हो गए।

केरल में छात्रों के बीच झगड़े ने लिया खूनी मोड़, छात्र की पीट-पीटकर हत्या

कोझिकोड (एजेंसी)। केरल के कोझिकोड में स्थित थामरसेरी में कुछ छात्रों की आपसी लड़ाई में घायल दसवीं कक्षा के एक छात्र की मौत हो गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुहम्मद शाहबाज नाम के इस छात्र को झड़प में गंभीर चोटें लगी थीं और उसने शनिवार को अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। बता दें कि पिछले रविवार को एक ट्यूशन सेंटर में विदाई समारोह के दौरान हुए विवाद के बाद एमजे हायर सेकेंडरी स्कूल और थमारसेरी तड्डास्स के छात्रों के बीच हुई लड़ाई में शाहबाज घायल हो गया था। रविवार को शुरुआती झगड़े के बाद शिक्षकों ने बीच-बचाव किया था लेकिन व्हाट्सएप संदेशों के जरिए तनाव बढ़ता गया और गुरुवार शाम को ट्यूशन सेंटर के पास फिर हिंसक

झड़प हो गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, गुरुवार शाम करीब 6.30 बजे थामरसेरी-वेझुपुर रोड पर एक चाय की दुकान के पास छात्रों के बीच घातक झड़प हो गई। हालांकि स्थानीय लोगों और दुकानदारों ने आपस में झगड़ रहे छात्रों को तितर-बितर करने के लिए बीच-बचाव किया, लेकिन बाद में सड़क पर फिर से मारपीट शुरू हो गई। बताया जा रहा है कि झगड़े के दौरान मुहम्मद शाहबाज को बुरी तरह पीटा गया और उसके सिर में गंभीर चोट आई। उसका अस्पताल में इलाज चला लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। पुलिस ने 10वीं कक्षा के 5 छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज करके शुक्रवार 28 फरवरी को उन्हें हिरासत में ले लिया।

दिल्ली की ट्रांसपोर्ट व्यवस्था में होगा बड़ा सुधार, परिवहन मंत्री ने किया ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अगुवाई वाली बीजेपी सरकार पूरी तरह से एक्शन मोड में है। इसी महीने दिल्ली की सड़कों पर एक हजार इलेक्ट्रिक बसों को उतारने की तैयारी की जा रही है। दिल्ली के

● मिलेंगी एक हजार से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें

परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने कहा है कि इस महीने राष्ट्रीय राजधानी को 1,000 से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें मिलेंगी। पंकज सिंह ने कहा कि दिल्ली का परिवहन विभाग (छ्रझ्ष्ट) वर्तमान में 235 करोड़ रुपये के घाटे में है। उन्होंने कहा कि सरकार एक योजना पर काम कर रही है और उसका लक्ष्य एक साल के भीतर इस क्षेत्र को मुनाफे में लाना है। पंकज सिंह ने कहा, ''इस महीने हम दिल्ली में 1,000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें लाएंगे।''

सुलभ और सुविधाजनक परिवहन पर जोर

दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार में छह कैबिनेट मंत्रियों में शामिल सिंह ने 20 फरवरी को शपथ ली थी। परिवहन, स्वास्थ्य और अन्य विभागों के मंत्री सिंह ने दिल्ली की परिवहन प्रणाली को जनता के लिए अधिक सुलभ और सुविधाजनक बनाने की जरूरत पर बल दिया। सिंह ने कहा, ''हमें सार्वजनिक परिवहन में सुधार करने की आवश्यकता है ताकि लोगों को निजी वाहनों पर कम निर्भर रहना पड़े। हमारा पहला कदम दिल्ली में इलेक्ट्रिक बसें शुरू करना होगा, उसके बाद परिवहन नेटवर्क को मजबूत करने के लिए और सुधार किए जाएंगे।'' उन्होंने कहा कि अगले छह महीनों में शहर में परिवहन क्षेत्र में धीरे-धीरे सुधार देखने को मिलेगा।

उन्होंने कहा, ''पहले चरण में हम तत्काल और आवश्यक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। दूसरे चरण में हम सार्वजनिक परिवहन को अधिक कुशल और सुलभ बनाने के लिए प्रमुख परियोजनाएं शुरू करेंगे।'' आधुनिक और पर्यावरण के अनुकूल परिवहन प्रणाली के लिए सरकार के दृष्टिकोण के तहत, सिंह ने दिल्ली में इलेक्ट्रिक बसों की संख्या बढ़ाने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, ''दिल्ली में पर्याप्त संख्या में इलेक्ट्रिक बसें नहीं हैं, हम और लाएंगे।'' उन्होंने कहा, ''इस महीने 1,000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें आने से सार्वजनिक परिवहन को काफी बढ़ावा मिलेगा, जिससे शहर को स्वच्छ बनाने में मदद मिलेगी।'' इस बीच, दिल्ली की इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति, 2020 जो पिछले साल अगस्त में समाप्त हो गई थी, को कई बार बढ़ाया गया। नवीनतम विस्तार 31 मार्च 2025 तक है। पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने 28 नवंबर 2024 को संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि खराब होती वायु गुणवत्ता को देखते हुए दिल्ली कैबिनेट ने ईवी नीति का विस्तार करने और एक जनवरी से लंबित सब्सिडी और पथ कर छूट को बहाल करने का फैसला किया है।

मध्यप्रदेश कौशल विकास के माध्यम से व्यापार अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध- मंत्री टेटवाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश कौशल विकास को आर्थिक विकास का एक प्रमुख आधार बनाने की दिशा में तेजी से कार्य कर रहा है। प्रदेश के युवा वर्ग को उद्योग जगत की मांग के अनुसार एडवांस ट्रेड में प्रशिक्षण देने के लिए कई नवा चार किए जा रहे हैं। जीआईएस-भोपाल में कौशल विकास और रोजगार विभाग ने कौशल प्रशिक्षण के लिए 8 एमओयू किए हैं। प्रदेश में निवेश बढ़ाने के साथ ही स्थानीय युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान देकर नीतियां बनाई जा रही हैं। यह बात कौशल विकास और रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल ने 5वें एपीएसी राष्ट्रीय कौशल कॉन्क्लेव में कही।

मंत्री श्री टेटवाल ने प्रदेश सरकार की ओर से व्यापार अनुकूल माहौल विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहराई और निजी क्षेत्र के साथ सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि युवाओं को सही कौशल से सशक्त बनाना उनकी रोजगार और उद्यमिता सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंत्री श्री टेटवाल ने उद्योग-उन्मुख कौशल, तकनीकी विशेषज्ञता और नवाचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी बल दिया, जिससे राज्य के युवा वैश्विक अर्थव्यवस्था की बदलती जरूरतों को पूरा कर सकें। प्रदेश सरकार युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने और उनकी कौशल क्षमता को उन्नत करने के लिए निजी क्षेत्र के साथ मिलकर काम कर रही है। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के सीईओ श्री गिरीश शर्मा ने राज्य में ह्यूमन कैपिटल (मानव संसाधन) पर किए जा रहे निवेश पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों और स्थानीय संस्थानों में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना के माध्यम से उद्योग-केंद्रित कार्य बल

तैयार किया जा रहा है, जो राज्य के औद्योगिक विकास में सहायक सिद्ध होगा।कॉन्क्लेव में एचपीसीएल, टाटा पॉवर, ग्रासिम इंडस्ट्रीज और जेबीएम ग्रुप जैसी अग्रणी कंपनियों के उद्योग विशेषज्ञों और एचआर प्रमुखों ने भाग लिया। उन्होंने नए युग की कार्यशैली के अनुरूप कौशल विकास की रणनीतियों और जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी उभरती तकनीकों के संदर्भ में प्रतिभा बनाए रखने की चुनौतियों पर चर्चा की। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि शैक्षणिक संस्थानों को अपने पाठ्यक्रम को उद्योग की मांगों के अनुरूप बनाना होगा, जिससे स्नातकों को प्रशिक्षित कर भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सके। विभिन्न सेक्टर स्किल काउंसिल्स और विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों ने सेक्टर-विशिष्ट कौशल अंतर को दूर करने और छात्रों को वैश्विक रोजगार बाजार के लिए तैयार करने पर चर्चा की। कुलपतियों ने इस विषय पर अपने विचार साझा किए कि छात्रों को उद्योग-उन्मुख शिक्षा प्रदान कर उन्हें वैश्विक मानकों के अनुसार तैयार किया जाए।

एपीएसी राष्ट्रीय कौशल कॉन्क्लेव ने सरकार, उद्योग और शिक्षा जगत के बीच संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। कॉन्क्लेव में उद्योग, शिक्षा और सरकारी क्षेत्र के प्रमुख प्रतिनिधियों और विषय विशेषज्ञों ने वैश्विक रोजगार बाजार की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार कौशल विकास के महत्व पर चर्चा की। कॉन्क्लेव के माध्यम से कौशल विकास के लिए सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया गया।

केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री से राज्य मंत्री गौर ने की सौजन्य भेंट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी से पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार श्रीमती कृष्णा गौर ने नई दिल्ली स्थित उनके कार्यालय में सौजन्य भेंट की। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने प्रदेश में पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, विमुक्त घुमन्तु एवं अर्द्ध घुमन्तु विभाग में किए जा रहे विभिन्न विकास कार्यक्रमों की जानकारी से केन्द्रीय मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को अवगत कराया।

ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान -राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि पशु संपदा ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते है। पशुपालन के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर पहुंचा जा सकता है। उन्होंने पंचगव्य के उपयोग और महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मूक प्राणी और पशुओं की सेवा पुण्य का कार्य है। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री पटेल की अध्यक्षता में आज नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर का सप्तम दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल श्री पटेल ने इस अवसर पर भारत रत्न नानाजी देशमुख की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सभी विद्यार्थी नानाजी की जीवन यात्रा से प्रेरणा ले और समाज सेवा के भाव को अपने जीवन में आत्मसात करें। उन्होंने संस्कारधानी में नानाजी के आदर्शों पर संचालित प्रदेश के एकमात्र पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के कार्यो की सराहना की। विश्वविद्यालय में हो रहे वन्य जीवन संरक्षण तथा रोग निदान अनुसंधान कार्य को अनुकरणीय बताया। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दीक्षांत प्रतिज्ञा को हमेशा याद रखें। शपथ का समाज और राष्ट्र सेवा में पालन करें। उन्होंने सभी दीक्षित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। राज्यपाल श्री पटेल ने विश्वविद्यालय प्रांगण स्थित नर्मदा कन्या छात्रावास का भ्रमण कर साफ़ सफाई, पानी, रसोई घर आदि की व्यवस्थाओं का जायजा लिया, आवश्यक निर्देश दिए। राज्यपाल श्री पटेल ने छात्राओं से आत्मीय चर्चा भी की। राज्यपाल श्री पटेल ने दीक्षांत स्मारिका का लोकार्पण किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के विभिन्न इकाइयों के कार्यों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री श्री पटेल ने कहा कि जिन विद्यार्थियों ने आज उपाधि प्राप्त कर समाज और राष्ट्र की प्रगति की शपथ ग्रहण की हैं उनके जीवन का यह महत्वपूर्ण पड़ाव है। उन्होंने कहा कि मूक पशुओं का इलाज कर उनके तकलीफों को समझकर दूर करने का प्रयास करते रहे। कार्यक्रम में कुलगुरू डॉ. मनदीप शर्मा द्वारा विश्वविद्यालय की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया। दीक्षांत समारोह में जनप्रतिनिधी, विभिन्न विश्विद्यालयों के कुलगुरु, छात्र छात्राएं व अभिभावकगण उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री शुक्ल का व्यक्त किया आभार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि राज्य सरकार प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त करने और स्वास्थ्य मानकों में मध्यप्रदेश को अग्रणी बनाने के लिए कृत-संकल्पित है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रदेश ने ऊर्जा, स्वच्छता, कृषि और सिंचाई जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि चिकित्सा शिक्षकों एवं चिकित्सकों के समर्पित प्रयासों से स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी यह लक्ष्य हम अवश्य प्राप्त करेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल से भोपाल स्थित निवास कार्यालय पर चिकित्सा महासंघ के प्रतिनिधियों ने भेंट कर आभार व्यक्त किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि चिकित्सकीय समुदाय के हितों के संरक्षण के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उनकी सुविधाओं एवं हितों की रक्षा हेतु आवश्यक प्रावधान किए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि चिकित्सा कार्मिकों की सेवा संबंधी विषयों और अन्य समस्याओं के समाधान के लिये उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है। प्रमुख सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा की अध्यक्षता में गठित उच्च स्तरीय समिति नियमित रूप से बैठक कर स्वास्थ्य सेवाओं के सशक्तीकरण और चिकित्सकीय कार्मिकों के हित संरक्षण से संबंधित विषयों पर चर्चा करेगी और आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करेगी, जिन पर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने तथा कुशल चिकित्सकीय मैन पॉवर की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सुझाव आमंत्रित किए।

2600 रूपये के समर्थन मूल्य पर अब 15 मार्च से उपार्जित किया जायेगा गेहूं -खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेहूं का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल एवं नर्मदापुरम् में 01 मार्च से तथा शेष संभाग में 17 मार्च से खरीदी के निर्णय में बदलाव करते हुये राज्य सरकार ने किसानों की मांग पर पूरे प्रदेश में एक साथ 15 मार्च से ही खरीदी करने का निर्णय लिया है। श्री राजपूत ने बताया कि वर्तमान में गेहूं की फसल कटाई पूर्ण नहीं होने तथा मंडियों में आ रहे गेहूं में समर्थन मूल्य उपार्जन हेतु भारत सरकार द्वारा निर्धारित नमी के प्रतिशत से अधिक होने के कारण किसानों को असुविधा से बचाने यह निर्णय सरकार द्वारा लिया गया है। विगत वर्षों में भी समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन 15 मार्च के बाद ही प्रारम्भ किया जाता रहा है।

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2025-26 में भारत सरकार द्वारा समर्थन मूल्य में 150 प्रति क्विंटल की वृद्धि करते हुए 2425 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य घोषित किया गया है। जबकि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली किसान हितैषी प्रदेश सरकार द्वारा गेहूं उत्पादक किसानों के हित में बडा और ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए समर्थन मूल्य 2425 रूपये के अतिरिक्त 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा की गई है। श्री राजपूत ने बताया कि राज्य के किसानों से 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी की जायेगी। खाद्य मंत्री ने किसानों के हित में लिये गये इस बड़े निर्णय के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार जताते हुये इसे खेती को लाभ का धंधा बनाने की ओर सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदमों का एक हिस्सा बताया है। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि प्रदेश में लगभग 80 लाख मे. टन गेहूं उपार्जन अनुमानित है।

जारी रहेगी उपनगर ग्वालियर में विकास की श्रृंखला - ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि उपनगर ग्वालियर में विकास कार्य लगातार जारी रहेंगे। यहां की बस्तियों में स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, पेयजल व सीवर जैसी मूलभूत सुविधाओं के विस्तार से क्षेत्र की तस्वीर बदल रही है। मंत्री श्री तोमर ने उपनगर ग्वालियर के वार्ड 13 में लगभग एक करोड़ 42 लाख रूपए लागत के विकास कार्यों के भूमि-पूजन अवसर पर यह बात कही। उन्होंने आम लोगों से शहर को साफ व स्वच्छ बनाये रखने में सहयोग देने की भी अपील की। मंत्री श्री तोमर ने वार्ड 13 में एक करोड 41 लाख 50 हजार रूपये के विकास कार्यों का भूमि पूजन किया। जिसमें समुदायिक भवन कोटा वाला मोहल्ला लागत राशि 10 लाख रूपये, सी.सी. रोड तानसेन नगर ई. ब्लॉक में लागत राशि 12 लाख 50 हजार रूपये, सी.सी. रोड लोहा मण्डी एवं तानसेन नगर बी. ब्लॉक राशि 5 लाख रूपये, नाली एवं सी.सी. मरम्मत कार्य विभिन्न गलियों में लागत राशि 10 लाख रूपये, सी.सी. रोड लोहा मण्डी ग्यासी आटा चक्की कोटा वाला मोहल्ला, पवन उपाध्याय की गली, फोर्ट रोड, दयाल स्टूडियो वाली गली, मायाचन्द धर्मशाला के पीछे, हजीरा डॉ. सोनकर की गली लागत राशि 9 लाख रूपये, सी.सी. रोड तानसेन नगर, आजाद त्रिपाठी वाली गली लागत राशि राशि 22 लाख रूपये एवं सी.सी. रोड तानसेन नगर राजीव कुशवाह वाली गली में 20 लाख रूपये की राशि से निर्माण कार्य शामिल हैं।

प्रदेश में कानून व्यवस्था के उत्कृष्ट संचालन के लिए पूर्व डीजीपी सक्सेना हुए सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोकसभा निर्वाचन-2024 के दौरान मध्यप्रदेश में सुचारू और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई। इसे संपन्न कराने में पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर सक्सेना और आईजी, स्टेट पुलिस नोडल अधिकारी (कानून व्यवस्था एवं सुरक्षा) श्री अंशुमान सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन के लिए पूर्व डीजीपी श्री सक्सेना और आईजी श्री सिंह को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी प्रशंसा-पत्र को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री सुखवीर सिंह द्वारा दोनों अधिकारियों को

प्रदान किया गया। मुख्य निवार्चन पदाधिकारी श्री सुखवीर सिंह ने बताया कि लोकसभा चुनाव-2024 में पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर सक्सेना एवं पुलिस महानिरीक्षक, स्टेट पुलिस नोडल अधिकारी (कानून व्यवस्था एवं सुरक्षा) श्री अंशुमान सिंह की कुशल नेतृत्व क्षमता और प्रभावी कार्यशैली से प्रदेश में स्वतंत्र, निर्बाध, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई थी। कानून व्यवस्था का प्रभावी ढंग से संचालन के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दोनों पुलिस अधिकारियों को प्रशंसा पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया है। इस दौरान संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री बसंत कुर्रे उपस्थित रहे।

सेवानिवृति पर दी अपर मुख्य सचिव केसरी को भावभीनी विदाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण एवं विमुक्त, घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री अजीत केसरी का विदाई समारोह विन्ध्याचल भवन के द्वितीय तल पर विभागीय राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर की उपस्थिति में हुआ। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अपर मुख्य सचिव श्री अजीत केसरी को गुलदस्ता एवं शाल, श्रीफल देकर सम्मानित किया तथा प्रतीक चिन्ह के रूप में राजाभोज की प्रतिमा भेंट की। विभाग के आयुक्त एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री सौरभ कुमार सुमन ने राज्यमंत्री एवं अपर मुख्य सचिव श्री केसरी का स्वागत गुलदस्ता एवं शाल, श्रीफल देकर किया। विभाग के अपर सचिव श्री अनुराग चौधरी, डॉ. देवेश मिश्रा ने भी अपर मुख्य सचिव श्री केसरी का स्वागत किया। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि अपर मुख्य सचिव श्री केसरी बहुत ही सरल हृदय एवं सहज अधिकारी है। अपर मुख्य सचिव श्री केसरी ने कहा कि विभाग के सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने टीम भावना से कार्य किया है, जिसका परिणाम आज विभाग की प्रगति के रूप में सामने है। निःसंदेह विभाग उत्तरोत्तर प्रगति करेगा, मेरी शुभकामनाएं विभाग के साथ है। आयुक्त श्री सुमन ने एक वर्ष के कार्यकाल में विभाग में हुई प्रगति का ब्यौरा दिया, जिसमें सीएम हेल्पलाइन में लंबित शिकायतों का निपटारा प्रमुख है। साथ ही पूर्व के वर्षों की लंबित छात्रवृत्ति का भी शत-प्रतिशत भुगतान किया गया है। विभाग पूरी तन्मयता से कार्य कर रहा है एवं अपर मुख्य सचिव श्री केसरी ने बहुत ही सामंजस्य एवं सहजता से हमारा मार्गदर्शन कर कार्य करने में सहयोग किया है। इसके लिये विभाग उनका आभारी है। विभाग का कार्यालय भदभदा रोड स्थित प्रशिक्षण केन्द्र से विन्ध्याचल भवन में शुरू हुआ है।

राज्य निर्वाचन आयुक्तों की 31वीं कॉन्फ्रेंस सिवनी में 4 मार्च तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। विभिन्न राज्यों के राज्य निर्वाचन आयुक्तों की 31वीं कॉन्फ्रेंस सिवनी जिले के पेंच राष्ट्रीय उद्यान में 01 से 04 मार्च तक आयोजित की जा रही है। इस कॉन्फ्रेंस में 22 राज्यों के राज्य निर्वाचन आयुक्त शामिल होंगे। कॉन्फ्रेंस में राज्य निर्वाचन आयुक्त स्थानीय निकायों के निर्वाचन के दौरान आई चुनौतियों तथा उनसे निपटने के उपायों पर चर्चा करेंगे। साथ ही नवाचारों और सुधारों से भी अवगत करायेंगे। कॉन्फ्रेंस में स्थानीय निकायों के निर्वाचन में नई तकनीकों के उपयोग पर भी चर्चा होगी।

आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार 02 मार्च को कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ होगा। प्रथम सत्र में मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग सचिव श्री अभिषेक सिंह द्वारा ई-पोलिंग बूथ तथा पेपर लेस बूथ के माध्यम से प्रदेश में पंचायत निर्वाचन कराए जाने की प्रक्रिया का प्रेजेंटेशन और फिल्म का प्रदर्शन किया जाएगा। इसी तरह स्व-चालित लोकल बॉडी इलेक्शन प्रक्रिया के संबंध में आन्ध्र प्रदेश निर्वाचन आयोग आयुक्त श्रीमती नीलम साहनी द्वारा प्रेजेंटेशन दिया जाएगा। द्वितीय सत्र में राज्य आयुक्तों की स्टैण्डिंग कमेटी की बैठक आयोजित होगी। इसमें स्थानीय निकायों के निर्वाचन के दौरान आई चुनौतियों तथा उनसे निपटने के उपायों पर चर्चा करेंगे।सोमवार 03 मार्च को स्थानीय निर्वाचन प्रक्रिया के उन्नयन के लिए चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता लाकर लोकतंत्र को मजबूत करने, दूरस्थ मतदाता के पंजीयन तथा ऑनलाईन मतदान की कार्य योजना सहित स्थानीय निर्वाचन में नवीन तकनीकों को अपनाऐं जाने जैसे विभिन्न बिंदुओ पर विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रेजेंटेशन दिया जाएगा। साथ ही निर्वाचन सामग्री उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधियों इलेक्ट्रानिक कॉर्पोरेशन इंडिया लिमिटेड, भारत इलेक्ट्रिकल्स कार्पोरेशन, आईआईटी लिमिटेड बैंगलोर प्रतिनिधियों सहित अन्य द्वारा नए इनोवेशन की जानकारी दी जाएगी। 04 मार्च को राज्य आयुक्तों का शैक्षणिक भ्रमण होगा। इस दौरान मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पेपर लेस बूथ का प्रदर्शन किया जाएगा।

कॉन्फ्रेंस में आंध्र प्रदेश की राज्य निर्वाचन आयुक्त श्रीमती साहनी, दिल्ली-चण्डीगढ़ के डॉ. विजय देव, गोवा के दौलत हवलदार, झारखण्ड के डॉ. बी.के. तिवारी, कर्नाटक के जी.एस. संगरेशी, राजस्थान के मधुकर गुप्ता, उड़ीसा के मधुसूदन पाधी, तेलंगाना की आई. रानी कुमुदिनी, हिमाचल प्रदेश के श्री अनिल कुमार खांची, असम के श्री आलोक कुमार, तमिलनाडु की बी. जोथी निर्मला सामी, महाराष्ट्र के श्री दिनेश टी. वाघमारे, सिक्किम के श्री के.सी. लेप्चा, जम्मू-कश्मीर के श्री बी.आर. शर्मा, केन्द्र शासित प्रदेश दादरनागर हवेली, दमन एवं दीव के श्री सुधांशु पाण्डे, त्रिपुरा के श्री शरदेंदु चौधरी, गुजरात के डॉ. एस. मुरलीकृष्णन, उत्तर प्रदेश के श्री राज प्रताप सिंह, उत्तराखण्ड के सुशील कुमार, बिहार के डॉ. दीपक प्रसाद और केरल के राज्य निर्वाचन आयुक्त ए. शाहजहाँ तथा मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव शामिल होंगे। साथ ही राज्य निर्वाचन आयोगों के सचिव एवं अन्य अधिकारी भी शामिल होंगे।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने डेटा स्टोरेज सटीकता बढ़ाने के लिए विकसित की सेमीकंडक्टर चिप

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने इंदौर स्थित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय परिवार को, सेमीकंडक्टर चिप विकसित करने की नवाचारी शोध करने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं। मंत्री श्री परमार ने शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. वैभव नीमा एवं उनके सहयोगी शोधार्थियों के पुरुषार्थ से सृजित यह नवाचार, तकनीक के क्षेत्र में निश्चित ही अपनी महती उपयोगिता सुनिश्चित करेगा। श्री परमार ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के यशस्वी नेतृत्व में, राज्य सरकार गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा और इसमें नवाचार, शोध एवं अनुसंधान के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है और निरंतर नए आयाम स्थापित कर रही है। तकनीकी शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं प्रगति के साथ, शैक्षणिक एवं अकादमिक स्तर पर उत्तरोत्तर गुणवत्ता वृद्धि हो रही है। श्री परमार ने कहा कि देवी अहिल्या विश्वविद्यालय का, तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी शोध करना, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। प्रदेश के

समस्त तकनीकी शिक्षण संस्थान भी शोध एवं नवाचार की दिशा में, नवीन आयाम स्थापित करने के लिए प्रयास करें।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) इंदौर ने एक सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन की है, जो डेटा स्टोरेज की सटीकता को बढ़ाती है, जिससे सैटेलाइट इमेजरी और बायोमेडिकल एप्लीकेशन को फायदा होता है। सेमीकंडक्टर चिप को डीएवीवी के इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (ढ्ढश्वञ्ज) के ङ्कस्ढ्ढ ग्रुप द्वारा टाइनी टेपआउट शैक्षणिक परियोजना के तहत विकसित किया गया है। यह परियोजना सेमीकंडक्टर डिज़ाइन को अधिक सुलभ और किफायती बनाने का लक्ष्य रखती है। इस उपलब्धि के साथ, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय उन प्रतिष्ठित भारतीय संस्थानों की सूची में शामिल हो गया है, जिन्होंने सफलतापूर्वक एक फैब्रिकेटेड सेमीकंडक्टर चिप डिज़ाइन किया है। यह चिप स्काईवाटर की 130ठ्ठद्व तकनीक का उपयोग करके विकसित की गई है, जो डेटा त्रुटियों का स्वत: पता लगाकर उन्हें सुधार सकती है। यह सफलता देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की अनुसंधान क्षमताओं को मजबूत करती है और विद्यार्थियों को अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर तकनीक में व्यवहारिक अनुभव प्रदान करती है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के आईईटी (ढ्ढश्वञ्ज) के फैकल्टी और रिसर्च स्कॉलर्स समेत सात सदस्यों की टीम ने इस चिप को डिज़ाइन किया है और इसे फैब्लैब मलेशिया से फैब्रिकेट करवाया है। इस टीम का नेतृत्व डॉ. वैभव नीमा ने किया, उनके साथ प्रोफेसर रवि सिंदल, सुश्री प्रियंका शर्मा, श्री आशीष पंचाल और पीएचडी स्कॉलर्स श्री ऋषभ बडज़ातिया, श्री अमित साहनी और सुश्री आस्था गुप्ता शामिल हैं।

नगर निगम ने जमीन से हटाए 6 अवैध मकान

कमिश्नर डीके शर्मा बोले- अवैध कब्जाधारियों के नोटिस का जवाब न देने पर हुई कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली नगर निगम ने शनिवार सुबह 6 पक्के मकानों को जेसीबी से गिरा दिया। ये मकान थाना रोड के बेलौंजी तिराहे के पास नगर निगम की बेशकीमती जमीन पर अवैध रूप से बने हुए थे।

लोगों ने कब्जे कर बनाए मकान: नगर निगम कमिश्नर डीके शर्मा ने बताया कि इस स्थान पर कई एकड़ जमीन खाली पड़ी थी। लोगों ने धीरे-धीरे इस पर कब्जा करके पक्के मकान बना लिए। कुल 36 अवैध मकानों में से 29 को पहले ही तोड़ा जा चुका हैं। आज 7 मकानों में से एक मालिक ने हाई कोर्ट से स्टे ले रखा हैं, इसलिए उसे छोड़कर बाकी 6 मकानों को तोड़ा गया।

कब्जाधारियों को कई बार दिया गया नोटिस: कमिश्नर ने बताया कि अवैध कब्जाधारियों को नगर निगम और जिला प्रशासन की ओर से कई बार नोटिस दिए गए। लेकिन उन्होंने न तो नोटिस का जवाब दिया और न ही खुद कब्जा हटाया।

अवैध रेत परिवहन करते ट्रैक्टर-ट्रॉली पकड़े

दस्तावेज नहीं होने पर कुसमी थाना पुलिस ने किए जब्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी के कुसमी तहसील में खनिज विभाग ने अवैध रेत परिवहन के खिलाफ कार्रवाई की हैं। विभाग की टीम ने ठाड़ीपाथर गांव में 1 शनिवार को छापेमारी के दौरान एक लाल रंग का ट्रैक्टर (एमपी 53 एए 7065) पकड़ा।

ट्रैक्टर चालक के पास खनन और परिवहन के कोई वैध दस्तावेज नहीं मिले। खनिज विभाग ने मध्य प्रदेश खनिज अवैध खनन, परिवहन तथा भंडारण का निवारण नियम 2022 के तहत वाहन को जब्त कर लिया। ट्रैक्टर को कुसमी थाना परिसर में शासकीय अभिरक्षा में रखा गया हैं।

कलेक्टर और खनिज अधिकारी के आगामी आदेश तक ट्रैक्टर थाने में ही रहेगा। यह ट्रैक्टर पहले भी ग्रामीणों की शिकायत पर राजस्व विभाग की टीम की ओर से पकड़ा गया था। लेकिन खनिज विभाग की ओर से समय पर कार्रवाई न होने के कारण छोड़ दिया गया था।

कुसमी थाना प्रभारी भूपेश बैस ने पुष्टि की है कि खनिज विभाग की कार्रवाई के बाद ट्रैक्टर को थाना परिसर में सुरक्षित रखा गया है।

सरपंच के घर चोरी, बदमाश ताला तोड़कर ले गए जेवरात, परिवार सोता रहा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना जिले की ग्राम पंचायत रमखिरिया में सरपंच के घर चोरी की वारदात सामने आई है। शुक्रवार रात को अज्ञात चोरों ने सरपंच रामखिलावन आदिवासी के घर से सोने-चांदी के जेवरात चुरा लिए। चोरी की वारदात उस समय हुई जब परिवार के सभी सदस्य घर में सो रहे थे। चोरों ने रात के अंधेरे का फायदा उठाकर अलमारी का ताला तोड़ा और अंदर रखी पेटी ले गए।

पेटी में सोने का मंगलसूत्र, तीन जोड़ी चांदी की बिछिया, एक तोला की चांदी की चेन और कुछ नगदी रखी थी। चोर जेवरात से भरी पेटी को मैदान की ओर ले गए। वहां से कीमती सामान निकालकर खाली पेटी और कपड़े वहीं छोड़ गए। सुबह जब सरपंच और उनकी पत्नी की नींद खुली तो उन्होंने गोदरेज का सामान बिखरा देखा। जेवरात का बक्सा गायब था। सरपंच के मुताबिक करीब 50 से 60 का सामान चोरी हुआ हैं।

सरपंच ने शनिवार को तुरंत बृजपुर पुलिस को घटना की सूचना दी। शनिवार को पुलिस टीम मौके पर पहुंची और केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी हैं। पुलिस अज्ञात चोरों की तलाश में जुटी हैं।

शहडोल के बटुरा में 50 से अधिक खदानें बंद, जेसीबी से भरवाई मिट्टी, अवैध कोयला निकालने पर कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के अमलाई थाना क्षेत्र के बटुरा में जिला प्रशासन ने अवैध कोयला खदानों के खिलाफ कार्रवाई की हैं। प्रशासन ने शनिवार को भारी पुलिस बल की मौजूदगी में जेसीबी से इन खदानों को मिट्टी से भरवाकर बंद करवा दिया हैं। दोपहर से प्रशासन किया कार्रवाई लगातार जारी हैं।

खनन माफिया सोन नदी के किनारे फिर से काले कवैध खदान संचालित कर ली थी। यहां से प्रतिदिन हजारों टन कोयला अवैध तरीके से निकाला जा रहा था। जिस पर यह कार्रवाई की गई हैं।

हादसे के बाद कार्रवाई: यह कार्रवाई हाल ही में हुई एक दुर्घटना के बाद की गई हैं, जिसमें अवैध कोयला खनन के दौरान एक दंपती की मौत हो गई थी। इस क्षेत्र में कोयला माफिया गुफानुमा खदानों से जान जोखिम में डालकर अवैध खनन और परिवहन करते थे।

50 से अधिक खदानें की बंद: माइनिंग विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम ने पचास से अधिक ऐसी अवैध खदानों को चिह्नित किया। सभी खदानों को जेसीबी की मदद से मिट्टी डालकर बंद किया गया। प्रशासन की यह कार्रवाई अवैध खनन पर रोक लगाने और स्थानीय लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई हैं।

प्रिज्म सीमेंट द्वारा मेसन मीट में सपने स्कॉलरशिप प्रोग्राम बांटे गए चेक

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। प्रिज्म सीमेंट ने ज्ञान ट्रेडर्स नौगांव जिला छतरपुर में एक शानदार मेसन मीट का आयोजन किया, जो निर्माण उद्योग के पेशेवरों के लिए एक अद्वितीय अनुभव साबित हुआ। इस विशेष कार्यक्रम में प्रिज्म सीमेंट के इन्फ्लुएंसर रिलेशनशिप मैनेजर लोकेश गुप्ता, छतरपुर ब्रांच मैनेजर सौरभ श्रीवास्तव, सेल्स प्रमोटर अर्जुन नायक,सेल्स ऑफिसर ऋषभ त्रिवेदी, टेक्निकल ऑफिसर ओम प्रकाश साहू और पुनीत मिश्रा डीलर विक्रांत जैन एंड उत्तम सिंह राजपूत जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गौरवान्वित किया।

कार्यक्रम में स्थानीय मिस्त्री, ठेकेदार और निर्माण विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस दौरान प्रिज्म सीमेंट के प्रमुख उत्पाद प्रिज्म चैंम्पियन प्लस, प्रिज्म ड्यूराटेक और प्रिज्म आल वेदर सीमेंट की विशेषताओं पर विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही, निर्माण गुणवत्ता सुधार, एडब्ल्यूसी डेमो और नवीनतम निर्माण तकनीकों पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई, जिससे उद्योग के पेशेवरों को नई दिशा प्राप्त हुई।

इस अवसर पर प्रिज्म सीमेंट ने 'सपने स्कॉलरशिप प्रोग्राम' के तहत ठेकेदार दशरथ अहिरवार एवं ठेकेदार दीपचंद की पुत्रियों को 11 हजार रुपए और साथ ही ठेकेदार पप्पू अहिरवार के पुत्र को 51 सौ रुपए की छात्रवृत्ति राशि प्रदान की गई,जो कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी और शिक्षा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

स्मैक तस्कर पकड़ाया, यूपी से लाई 50 हजार की स्मैक बरामद, आरोपी सोनभद्र का रहने वाला

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में कार्रवाई की हैं। जयंत पुलिस ने उत्तर प्रदेश से स्मैक की तस्करी करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया हैं। आरोपी रामकुमार मिश्रा (35) सोनभद्र के शक्ति नगर में काली मंदिर रोड का रहने वाला हैं। उसके पास से 5 ग्राम स्मैक बरामद की गई हैं, जिसकी बाजार कीमत करीब 50,000 रुपए हैं।

जयंत चौकी प्रभारी सुधाकर सिंह परिहार ने शनिवार को बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति यूपी से स्मैक लेकर सिंगरौली आ रहा हैं। इस पर पुलिस ने सिंगरौली-यूपी बॉर्डर पर घेराबंदी कर आरोपी को पकड़ लिया। आरोपी के खिलाफ मादक पदार्थ अधिनियम के तहत केस दर्ज कर उसे न्यायालय में पेश किया हैं।

अक्सर इस मार्ग से मादक पदार्थों की तस्करी होती हैं: चौकी प्रभारी ने बताया कि जयंत क्षेत्र यूपी के शक्ति नगर से सटा होने के कारण अक्सर इस मार्ग से मादक पदार्थों की तस्करी होती हैं। पुलिस लगातार ऐसे अपराधियों पर नजर रख रही हैं और सटीक सूचना मिलते ही कार्रवाई करती हैं। इस कार्रवाई में सहायक उप निरीक्षक राजवर्धन सिंह, रवि गोस्वामी और प्रधान आरक्षक सुनील मिश्रा की अहम भूमिका रही।

पुण्यतिथि पर श्रद्धांजली एवं संगोष्ठी का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अमर शहीद युवा क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के पुण्यतिथि पर पं. चंद्रशेखर युवा उत्थान संस्थान त्योंथर की तरफ से कार्यालय में श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आजाद के प्रतिमा पर पुष्प अर्पित द्वीप प्रज्वलित कर श्रद्धांजलि दी गई तथा उनके द्वारा स्वतंत्रता के समर्पण और निष्ठता को याद कर युवाओं को उनके बारे मे बताया गया। आजाद के बलिदान का स्मरण करते हुए अनिकेत मिश्रा बताया कि दुश्मनों की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं आजाद ही रहेंगे। इस प्रण को उन्होंने जीते जी निभाया। आज ही के दिन 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज और उनकी पुलिस ने एक मुखबिर की मदद से चंद्रशेखर आजाद को चारों ओर से घेर लिया था आजाद ने पुलिस के अनेक सिपाहियों को धराशाई किया, जबकि आजाद को चार गोलियां लग चुकी थी। पुलिस उन्हें जिंदा पकड़ना चाहती थी, लेकिन आजाद ने प्रतिज्ञा ली थी कि वह कभी पुलिस के पकड़ में नहीं आएंगे। जब आजाद के पास अंतिम गोली बची तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए वह गोली पुलिस पर ना चला कर खुद अपनी कनपटी पर मार ली और 27 फरवरी 1931 को मात्र 18 वर्ष की आयु में चंद्रशेखर आजाद ने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। आकाश सिंह ने कहा कि चंद्रशेखर आजाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर नायक थे, जिनके भीतर मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण और अपराजेय साहस था। उन्होंने कहा कि चंद्रशेखर आजाद जी ने अपने जीवन की अंतिम सांस तक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, लेकिन कभी भी ब्रिटिश हुकूमत के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। उनका बलिदान देशभक्ति, स्वाभिमान और वीरता का अद्वितीय उदाहरण है, जिसने हजारों युवाओं के हृदय में क्रांति की मशाल प्रज्वलित कर दी। चंद्रशेखर आजाद जी का जीवन हमें त्याग, साहस और निडरता की सीख देता है। चंद्रशेखर आजाद जी की देशभक्ति की भावना आज भी राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना रखते हुए देशहित में निरंतर कार्य करने की प्रेरणा हम सभी को देती है। इस दौरान सचिव मनीष यादव, कोषाध्यक्ष संजय तिवारी,सह कोषा.आयुष गुप्ता,निलेश मिश्रा,शिवाकांत पांडेय, कार्यालय मंत्री प्रकृति चंद्र गुप्ता,अशोक गुप्ता,मंत्री शनि जायसवाल, विश्वजीत सिंह, शिवदयाल तिवारी, सत्यम गुप्ता,सहित अन्य ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

28 रक्तवीरों ने किया रक्तदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सिन्धु विकास समिति के अध्यक्ष विनोद गेलानी ने बताया संस्था निरंतर सर्व समाज को रक्त की सेवा प्रदान कर रही है ।संस्था का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना हैं ,मानवता की सेवा के इस पवित्र-यज्ञ में अपने लहू की आहुति देने वाले इन रक्तदाताओं के लिए ना कोई जाति मायने रखती हैं ,और ना ही धर्म,बस एक जुनून हैं जो इन्हें हर जरूरतमंद को रक्तदान के लिए प्रेरित करता हैं।

महामंत्री घनश्याम मंघरानी ने बताया फरवरी माह में 3 महिलाओं सहित 28 रक्तवीरों ने रक्तदान कर इंसानियत का सच्चा धर्म निभाया। रक्तदान करने वालों में सिमरन चंचलानी, वंदना चक्रवाती, रागिनी मोड़िया ईशान चोपड़ा ठाकुरदास लालवानी [बबलू] संजय मनवाणी शहज सिद्दीकी हेमंत साबू शिवांग जी भूपेंद्रपाल सिंह प्रदीप सोनी जितेंद्र आहूजा चौरसिया ओम प्रकाश जाट जगदीश लाल जागीर दीपांशु श्रीवास्तव प्रशांत सिंह संजय होतचंदानी नीरज चोपड़ा अभिषेक जैन राजेश कोटवानी सुभाष बनर्जी शुभम वर्मा राज मिश्रा विक्की बालचंदानी पंकज आहूजा सोनिया मैडम जी ने रक्तदान किया।

रक्तदान करवाने में आकाश बनर्जी संजय वाधवानी दिलीप सोनी मनमोहन माहेश्वरी मनीष सदानी बंसी नागदेव जी का उल्लेखनीय सहयोग रहा। रक्तवीरों के रक्तदान करने पर समिति के सदस्यों एवं समाजसेवियों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की हैं।

पिकअप में भर कर ले जा रहा था 1 टन अवैध कोयला, चालक गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। भालूमाड़ा पुलिस ने शुक्रवार को ग्राम भाद में शासकीय हाई स्कूल के पास से एक पिकअप वाहन में भरा हुआ अवैध कोयला जब्त किया हैं। पुलिस ने पिकअप वाहन नंबर एमपी 65 जीए 1060 से 1.012 टन अवैध कोयला बरामद किया। कोयले की कीमत लगभग 10,000 रुपए आंकी गई हैं। पुलिस ने पिकअप चालक सागर कुमार मिश्रा (33) को गिरफ्तार कर लिया हैं। आरोपी ग्राम मौहरी, थाना बिजुरी, अनूपपुर का रहने वाला हैं।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ खान खनिज अधिनियम की धारा 303(2) और 317(5) के तहत अपराध क्रमांक 81/2025 दर्ज किया हैं।

स्कूटी की डिक्की में छिपाकर ले जा रहा था 2 किलो गांजा, पुलिस ने किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर की बिजुरी पुलिस ने शुक्रवार को एक आरोपी को 2 किलो गांजा के साथ गिरफ्तार किया हैं।

पुलिस अधीक्षक मोती उर रहमान के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान में यह कार्रवाई की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मो. इसरार मंसूरी और एसडीओपी कोतमा आरती शाक्य के मार्गदर्शन में बिजुरी पुलिस ने यह सफलता हासिल की।

मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति स्कूटी की डिक्की में गांजा लेकर लोहसरा से ग्राम बछौली की तरफ आ रहा हैं। पुलिस ने बछौली के पास घेराबंदी कर आरोपी को पकड़ लिया। आरोपी की पहचान सुरेश यादव (40) के रूप में हुई। वह लोहसरा का रहने वाला हैं।

आरोपी के पास से जब्त स्कूटी का नंबर एमपी 65एस6305 हैं। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/20 के तहत मामला दर्ज कर लिया हैं। उसे गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जा रहा हैं।

ट्रैक्टर-थ्रेसर पलटा, आग लगने से दो की मौत

स्थानीय लोगों का आरोप- पुलिस और फायर ब्रिगेड देरी से पहुंची

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के बकस्वाहा थाना क्षेत्र में गुगवारा-सेदरा रोड पर शनिवार शाम करीब 4 बजे एक ट्रैक्टर-थ्रेसर पलट गया, जिससे दो लोगों की मौत हो गई। ट्रैक्टर-थ्रेसर पलटने से उसमें आग लग गई और दोनों उसके नीचे फंस गए।

मृतकों की पहचान महुटा गांव के 25 वर्षीय अशोक यादव और 17 वर्षीय मोहित गौड़ के रूप में हुई हैं। दोनों युवक बमोरी से महुटा गांव की ओर फसल की थ्रेसिंग के लिए जा रहे थे। बताया जा रहा हैं कि हादसा तेज रफ्तार के कारण हुआ।

पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम देरी से पहुंची: जानकारी के मुताबिक, हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस और प्रशासन को सूचना दी, लेकिन पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर देर से पहुंची। ट्रैक्टर में लगी आग को बुझाने में करीब डेढ़ घंटे का समय लगा। स्थानीय लोगों का कहना हैं कि अगर पुलिस और दमकल की टीम समय पर पहुंचती तो शायद दोनों युवकों की जान बचाई जा सकती थी। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। इस मामले में बक्सवाहा थाना प्रभारी कृपाल मार्को से संपर्क का प्रयास किया गया, लेकिन उनसे बात नहीं हो सकी। एडिशनल एसपी विक्रम सिंह ने कहा कि वे मामले की जानकारी लेकर थाना प्रभारी से बात करेंगे।

हाईवे पर गाड़ी खड़ी करने पर रोक

पुलिस ने होटल-ढाबा संचालकों को जारी किया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया हैं। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर यातायात हाईवे चौकी ने सभी होटल और ढाबा संचालकों को नोटिस जारी किए हैं। नोटिस में स्पष्ट किया गया है कि होटल या ढाबे के सामने हाईवे पर ग्राहकों के वाहन खड़े करने की अनुमति नहीं है।

यह निर्णय इसलिए लिया गया है क्योंकि हाईवे पर खड़े वाहन न केवल दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं, बल्कि यातायात में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। पुलिस प्रशासन ने होटल और ढाबा संचालकों को चेतावनी दी है कि नियमों का उल्लंघन करने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह अभियान सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने और यातायात व्यवस्था को सुचारू रखने के लिए चलाया जा रहा है।

फ्लाई ऐश वाहनों में टू-वे कैमरा लगाना अनिवार्य

कलेक्टर ने जारी किए आदेश, गति सीमा भी 20 किमी प्रति घंटा तय

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली में बढ़ते सड़क हादसों को रोकने के लिए जिला प्रशासन ने शनिवार को फ्लाई ऐश परिवहन को लेकर बैठक आयोजित की गई।

इसमें जिला कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला ने फ्लाई ऐश ले जाने वाले सभी वाहनों में टू-वे कैमरा लगाने के निर्देश दिए हैं। इससे वाहनों की गति, समय और रूट की निगरानी की जा सकेगी। यह कदम प्रतिबंधित मार्गों पर वाहनों के आवागमन को रोकने में मदद करेगा।

वैकल्पिक मार्गों पर वन-वे ट्रैफिक व्यवस्था लागू की जाएगी। इन मार्गों का चौड़ीकरण किया जाएगा और पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। वैकल्पिक मार्गों पर वाहनों की गति सीमा 20 किलोमीटर प्रति घंटे निर्धारित की गई है।

एनटीपीसी को निर्देश दिए गए हैं कि परिवहन मार्गों के सुधार कार्य में स्थानीय लोगों को रोजगार दिया जाए। वाहन चालकों के पास वैध लाइसेंस और अन्य दस्तावेज होने चाहिए। साथ ही उनके चरित्र का पुलिस सत्यापन भी अनिवार्य किया गया है।

प्रदूषण रोकने के लिए सभी वाहनों को पूरी तरह से ढका होना चाहिए। बैठक में नगर निगम अध्यक्ष देवेश पांडे, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार वर्मा, खनिज अधिकारी, जिला परिवहन अधिकारी विक्रम सिंह राठौड़ और यातायात थाना प्रभारी दीपेंद्र सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. प्रतीक और डॉ. अनुश्री को मिली पीएचडी की उपाधि

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर में 28 फ़रवरी को सातवां दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। जिसमें राज्यपाल मंगूभाईपटेल और पशुपालन मंत्री के उपस्थिति में डॉ. प्रतीक और डॉ. अनुश्री को पीएचडी की उपाधि दी गई। डॉ. प्रतीक वेटरनरी फार्माकोलॉजी एंड टॉक्सिकोलॉजी में जबकी डॉ अनुश्री वेटरनरी पैथोलॉजी में रिसर्च की हैं। इस उपलब्धि में परिवार और गुरुजनो ने खुशी जताई। साथ ही डॉ रेखा तिवारी डॉ शिवश्री तिवारी, संजीव मिश्रा, संतोष मिश्रा, किरण मिश्रा, राम नरेश मिश्रा सुचिता मिश्रा ने खुशी जताते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की हैं।

विचार

बेलगाम नेताओं को कानूनी नजरिए से बांधने की न्यायिक पहल भी बेकार

जब राजनीति से भ्रष्टाचार और अपराध खत्म करने के दृष्टिगत केंद्र सरकार ही गम्भीर नहीं है, तब इसे रोकवा पाना न्यायपालिका के लिए कतई संभव नहीं है। चूंकि केंद्र सरकार अपने वर्तमान राजनीतिक नेतृत्व के इशारे पर हर फैसले लेती है, इसलिए बेलगाम नेताओं को कानूनी नजरिए से बांधने की अधिकांश न्यायिक पहल भी बेकार चली जाती है। सच कहूं तो नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाती है।

ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि खुद केंद्र सरकार ने ही दोषी करार दिए गए राजनीतिक नेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने का अनुरोध करने वाली एक अर्जी का सुप्रीम कोर्ट में विरोध किया है। इससे सरकार की %बदनीयती% समझ में आती है। एक तो वह समय रहते ही कानून नहीं बनाती है और दूसरे जब इसकी मांग उठती भी है तो अपने पूरे सियासी गिरोह की ढाल बनकर खड़ी हो जाती है।

तभी तो सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखते हुए कहा कि इस तरह की अयोग्यता तय करना केवल संसद के अधिकार क्षेत्र में आता है। वहां दाखिल अपने हलफनामे में केंद्र ने कहा है कि अर्जी में जो अनुरोध किया गया है, वह विधान को फिर से लिखने या संसद को एक खास तरीके से कानून बनाने का निर्देश देने के समान है। चूंकि संविधान ने संसद को अयोग्यता से जुड़े ऐसे अन्य कानून बनाने का अधिकार दिया है, जिसे बनाना वह सही समझता हो।

सरकार के मुताबिक, संसद के पास अयोग्यता के आधार और उसकी समयसीमा, दोनों तय करने की शक्ति है। ऐसे में आजीवन प्रतिबंध लगाना सही होगा या नहीं, यह पूरी तरह से संसद के अधिकार क्षेत्र में आता है। सरकार का तर्क है कि कानून का स्थापित सिद्धांत है कि दंड या तो समय या मात्रा के अनुसार तय होते हैं। लिहाजा, सजा के असर को एक समय सीमा तक सीमित रखना कोई असंवैधानिक बात नहीं है। बता दें कि संविधान के अनुच्छेद 102 और 191 संसद, विधानसभा या विधानपरिषद की सदस्यता के लिए अयोग्यता से सम्बन्धित है। अपने हलफनामे में केंद्र ने रेखांकित किया है कि सुप्रीम कोर्ट ने लगातार यह कहा है कि एक विकल्प या दूसरे पर विधायी विकल्प के असर को लेकर अदालतों में सवाल नहीं उठाया जा सकता। ऐसे में इस विषय पर न्यायिक हस्तक्षेप उचित नहीं है! इसलिए कोर्ट विवेकसम्मत व न्यायसंगत निर्देश दे। बता दें कि वर्तमान में जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8 (1) के तहत, किसी भी नेता को सजा होने के बाद 6 साल तक चुनाव लड़ने से रोका जाता है। इसलिए केंद्र ने कहा है कि उक्त धाराओं के तहत आजीवन प्रतिबंध लगाना सही नहीं होगा। इस प्रकार सरकार ने कोर्ट के समक्ष तीन बातें स्पष्ट कर चुकी है। पहला यह कि संविधान ने संसद को अयोग्यता से जुड़े कानून बनाने का अधिकार दिया है।

महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं ने दुष्प्रचारों को अनसुना कर बनाया कीर्तिमान

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर 26 फरवरी के सूर्यास्त के साथ ही महाकुंभ का समापन हो चुका है,13 जनवरी से 26 फरवरी 45 दिन में 66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने महाकुंभ में डुबकी लगाई है। महाकुंभ के दौरान त्रिवेणी के घाटों पर डुबकी लगाने वालों की यह संया दुनिया के 193 देशों की आबादी से ज्यादा है। दुनिया में सिर्फ भारत और चीन की आबादी महाकुंभ 2025 में आए श्रद्धालुओं से अधिक है। वैसे भी महाकुंभ 2025 ने देश व दुनिया में विश्व के सबसे प्राचीन सनातन धर्म की महान संस्कृति व अद्भुत परंपराओं की दिव्यता का डंका बजाने का कार्य बखूबी किया है।मोदी व योगी सरकार के प्रयासों से इस बार प्रयागराज में संगम की पावन धारा में देश व दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में बसे हुए लगभग 120 करोड़ सनातन धर्म के अनुयायियों में से लगभग 66 करोड़ से लोगों ने संगम में एक दिव्य अलौकिक डुबकी लगा करके अपने तन-मन की शुद्धि और आत्मा की तृप्ति करने वाला दिव्य अलौकिक अनुभव प्राप्त कराने का कार्य किया है। इस बार महाकुंभ में 75 देशों के डेलीगेट भी आये थे, देश व दुनिया के विभिन्न बड़े सेलिब्रिटी व उद्योगपति भी आये थे, जो सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के मद्देनजर एक बहुत ही अच्छा व सकारात्मक संकेत है।

वहीं दूसरी तरफ महाकुंभ के दौरान देश में चंद लोगों की एक ऐसी जमात भी खडी हो गयी थी, जिन्हें महाकुंभ में सबकुछ ग़लत होता हुआ ही नज़र आ रहा था। उन लोगों की जमात को महाकुंभ में बेहद खराब व्यवस्था नज़र आ रही थी, गिद्ध दृष्टि के चलते हर तरफ गंदगी का अंबार लगा हुआ नज़र आ रहा था, नदी में जल की जगह मल-मूत्र वाला नालों का जहरीला गंदा पानी नज़र आ रहा था, जगह-जगह भोजन-पानी के लिए तरसते श्रद्धालु नज़र आ रहे थे, महाकुंभ में लूट-खसोट नज़र आ रही थी, पूजा-पाठ की जगह धार्मिक पाखंड नज़र आ रहा था, सुविधाओं के भारी अभाव के चलते तिल-तिल कर मरते लोग नज़र आ रहे थे, जगह-जगह जाम का झाम आदि ही केवल नज़र आ रहा था, जिसका इन लोगों के गैंग ने मीडिया व सोशल मीडिया के विभिन्न ताकतवर प्लेटफार्मों पर पहले ही दिन से अपने चंद क्षणिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए जमकर के फैलाते हुए दुष्प्रचार करने का कार्य किया था। लेकिन 144 वर्ष बाद लगने वाले महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं ने इन दुष्प्रचार करने वाले लोगों के गैंग की एक भी ना सुनी और 13 जनवरी से 26 फरवरी महाकुंभ के समापन तक 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने महाकुंभ में पहुंच करके स्नान करके दुनिया के किसी भी तरह के आयोजन में सबसे ज्यादा लोगों के पहुंचने का कीर्तिमान बनाकर नया इतिहास रच डालने का कार्य कर दिया। महाकुंभ में दुनिया के 193 देशों की आबादी से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई और महाकुंभ नगरी में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में इंतजामों की पूरी ही व्यवस्था अकल्पनीय अद्भुत नज़र आयी। हालांकि अब महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर अंतिम स्नान 26 फरवरी 2025 के साथ त्रिवेणी के तट पर 13 जनवरी 2025 से सजा हुआ सनातन धर्म, संस्कृति व परंपराओं के अद्भुत महाकुंभ का मेला नित-नए कीर्तिमान को स्थापित करते हुए दिव्य, भव्य, नव्य व अलौकिक अनुभूति के साथ संपन्न हो गया है। आंकड़ों की बात करें तो महाकुंभ 2025 के समापन तक प्रयागराज में त्रिवेणी के विभिन्न घाटों पर लगभग 66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने स्नान करके महाकुंभ को विश्व का सबसे बड़ा आयोजन होने का कीर्तिमान भारत के नाम करने का काम कर दिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में यह एक ऐसा रिकॉर्ड बन गया है, जिसको किसी भी देश के द्वारा तोड़ना असंभव है। लेकिन इसके साथ ही महाकुंभ आयोजन की सबसे बड़ी बात यह रही कि 66 करोड़ से ज्यादा लोगों को स्नान करवाने लिए संगम नगरी को तैयार करने की बहुत बड़ी चुनौती पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पूरी तरह से खरे उतरे, उन्होंने इस असंभव कार्य को दिन-रात पूरी टीम के साथ मेहनत करते हुए धरातल पर संभव करके देश व दुनिया को दिखा दिया है। वैसे देखा जाए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के प्रयासों से व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में यूपी सरकार के प्रचार-प्रसार, प्रयासों के चलते ही महाकुंभ 2025 के शुरू होने से पहले ही लगभग 40-45 करोड़ लोगों के आने का अनुमान लगाया जाने लगा था, लेकिन समापन महाशिवरात्रि तक संगम तट पर 66 करोड़ से ज्यादा लोगों की भारी भरकम भीड़ उमड़ पड़ी, उस भारी-भीड़ ने देश व दुनिया को दिखा दिया कि अलग-अलग हिस्सों में बसे हुए सनातन धर्मी एकजुट, नियम कायदे कानून पसंद व बेहद ही अनुशासित हैं। तभी तो हजारों किलोमीटर की दूरी से आ कर के बहुत लंबी पैदल यात्रा करने के बाद भी संगम में उन सभी भक्तों के द्वारा अनुशासित होकर के स्नान की एक डुबकी लगाकर के सनातन धर्म, संस्कृति, परंपराओं व ईश्वर भक्ति के अटूट विश्वास को बयां करने का कार्य देश व दुनिया में बखूबी किया है और सनातन धर्म संस्कृति पर आये दिन तरह-तरह से प्रश्नचिन्ह लगाने वाले लोगों को शांतिपूर्ण ढंग से जवाब दिया है। श्रद्धालुओं का यह कहना बिल्कुल भी ग़लत नहीं है कि प्रयागराज व पूरी महाकुंभ नगरी क्षेत्र केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों की दिव्यता की झलक देश व दुनिया तक बयां करने का कार्य बखूबी कर रहा है। देश व दुनिया से आये हुए संत-महात्माओं, नागा साधुओं व सनातन धर्म के अनुयायियों को त्रिवेणी संगम में पुण्य स्नान करा कर उन्हें प्राचीन व आधुनिकता के संगम से परिपूर्ण एक दिव्य अलौकिक आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त कराने के लिए योगी सरकार ने कोई कोर-कसर धरातल पर नहीं छोड़ी है। महाकुंभ में डुबकी लगाने वाले श्रद्धालुओं ने अकल्पनीय दिव्य एवं भव्य आयोजन की सराहना करते हुए महाकुंभ के सफल आयोजन को योगी आदित्यनाथ सरकार की एक बहुत ही बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि बताया है।

वैसे भी देश व दुनिया के सनातन धर्म के अधिकांश लोगों का मानना है कि योगी आदित्यनाथ के प्रयासों के चलते ही इस भव्य दिव्य अद्भुत अलौकिक धार्मिक आयोजन को दुनिया के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा। योगी सरकार ने जिस तरह से महाकुंभ में आये लगभग 66 करोड़ से ज्यादा लोगों की सुख-सुविधाओं के लिए भव्य आधुनिक इंतज़ाम किये वह प्रशंसनीय है। उन्होंने पूरे महाकुंभ में मुख्यमंत्री के रूप में सर्वाधिक बार आने का रिकॉर्ड बनाकर देश व दुनिया के सनातन धर्मियों को भावनात्मक रूप से यह एहसास करवाने का कार्य किया है कि वह सनातन धर्म की केवल अपने भाषणों में बात ही नहीं करते हैं, बल्कि मुख्यमंत्री होने के बावजूद भी वह देश की मूल आत्मा सनातन धर्म, संस्कृति व उसकी परंपराओं को रोजमर्रा के अपने जीवन में जीने का कार्य करते हैं और उसके प्रचार-प्रसार व हित के लिए निष्ठा व ईमानदारी से धरातल कार्य करते हैं।

लेकिन उसके बावजूद भी वोट बैंक की बेहद ओछी राजनीति के चलते महाकुंभ 2025 के शुरू होने से पहले योगी आदित्यनाथ व उत्तर प्रदेश सरकार को कुछ लोगों ने अपने निशाने पर लेना शुरू कर रखा था। उन सभी लोगों के गैंग को महाकुंभ में पहले दिन से ही गंदगी के अंबार, अव्यवस्थाओं की भरमार, गंदा जल, कड़ाके की ठंड में स्नान करने से मरते लोग, भूख व प्यास से मरते लोग, अव्यवस्था की भेंट चढ़ते लोगों का जीवन, मरते हुए लोग, संगम में जेसीबी से बहा दी गयी लाशें, रेलवे व बस स्टेशनों आदि पर भारी भीड़ के चलते अव्यवस्था, गंदगी से भरी हुई जन सुविधाएं, प्रयागराज शहर में व उसके चारों तरफ सड़कों पर 300-300 किलोमीटर तक लगा लंबा जाम आदि नज़र आ रहा था। वहीं दूसरी तरफ महाकुंभ में आने वाले आस्था से ओतप्रोत श्रद्धालुओं ने इस गैंग की बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया, श्रद्धालु भारी संख्या में प्रयागराज पहुंचे और उन्होंने दिव्य संगम तट पर योगी सरकार के द्वारा किए गए आधुनिक दिव्य भव्य अकल्पनीय व्यवस्थाओं के अंबार को अपनी आंखों से देखा, उन्होंने संगम रेती पर बसे अद्भुत आध्यात्मिक महाकुंभ नगरी को देखा, अखाड़ों के नगर प्रवेश के भव्य जुलूस को देखा, अखाड़ों के अद्भुत पंडालों को देखा, दिव्य अद्भुत साधु-संतों को करीब से देखा, भस्म लपेट हुए धूनी रमाए नागाओं को तप करते हुए देखा, संगम की रेती में पूजा अर्चना करते हुए आम व खास लोगों को देखा, बहती मां गंगा को देखा, मां यमुना को देखा, संगम स्थल को देखा, सरस्वती कूप को देखा, पौराणिक अक्षय वट को देखा, संगम किनारे लेटे हुए हनुमान जी के मंदिर के दिव्य दर्शन करती भारी-भीड़ को देखा, अखाड़ों के दिव्य अमृत स्नान को देखा, आधुनिक टेंट नगरी को देखा, महाकुंभ में प्रतिदिन औसतन एक करोड़ लोगों को आस्था की डुबकी लगाते हुए देखा, रोज़ाना के दिव्य अलौकिक शक्ति की अनुभूति का अहसास करते लोगों को देखा, पावन दिव्य त्रिवेणी के घाट-घाट पर बिना किसी जाति भेदभाव के स्नान करते हुए सनातन धर्मियों की भारी-भीड़ का अंबार लगते देखा, एक दूसरे लोगों की मदद करते लोगों का व्यवहार देखा, अमीर व गरीब दोनों वर्गों के जो लोगों रोजी-रोटी कमाने की उम्मीद लगा कर आये थे उन लोगों के फलते-फूलते व्यापार को देखा, देश व दुनिया से आये लाखों ऐसे श्रद्धालुओं को देखा जिन्हें पूजा-पाठ व कल्पवास में रहकर शांति मिली रही अपार, सनातन को समझने आये देश व दुनिया के पर्यटकों ने खोज करी हज़ार।

चुनावों के जरिए लोकतंत्र के सूरज का हो रहा उदय

नक्सलियों के आतंक के गढ़ रहे नक्सली प्रभावित इलाकों में चुनावों के जरिए लोकतंत्र के सूरज का उदय हो रहा है। इससे लोकतंत्र के प्रति भरोसा बढने के साथ ही इसकी जड़ें मजबूत हो रही हैं। भटके हुए युवाओं और डरे हुए ग्रामीणों को समझ में आने लगा है कि सिर्फ लोकतांत्रित तरीके से ही उनकी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। छत्तीसगढ़ में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के प्रथम चरण के लिए वोट डाले गए। इस दौरान बस्तर संभाग के सुकमा और बीजापुर जिले के अनेक मतदान केंद्रों पर पहली बार अनेक दशकों के बाद ग्राम पंचायतों में मतदान हुए। इस बार बस्तर में पंचायत चुनावों का नक्सलियों की ओर से कोई विरोध नहीं किया जाना क्षेत्र में 40 से अधिक नई सुरक्षा कैंपों की स्थापना और सरकार की ओर से ग्रामीणों में विश्वास बहाल करने की रणनीति का परिणाम है।

यह एक ऐतिहासिक बदलाव है और लोकतांत्रिक मूल्यों की जीत को दर्शाता है। राज्य में मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी, दंतेवाड़ा और गरियाबंद जिलों में और बीजापुर के पुसनार, गंगालूर, चेरपाल, रेड्डी, पालनार जैसे क्षेत्रों में ग्रामीणों ने निर्भीक होकर मतदान किया। गौरतलब है कि बस्तर में नक्सली कमांडर हिड़मा के गांव पूवर्ती में भी इस बार ग्रामीण मतदान के लिए उत्साहित हैं। छत्तीसगढ़ में नगरीय निकाय चुनाव के बाद अब पंचायत चुनाव हो रहे हैं। पंचायत चुनावों में ऐसा पहली बार हो रहा है जब नक्सलियों ने इसका विरोध नहीं किया है। राज्य में कमजोर हो रहे नक्सलवाद का यह सबसे बड़ा उदाहरण है।

छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद से हर बार पंचायत चुनावों में नक्सलियों की तरफ से पोस्टर जारी किए जाते थे लेकिन ऐसा पहली बार हो रहा है जब नक्सलियों ने विरोध नहीं किया। इसके साथ ही स्थानीय लोग भी वोटिंग करने के लिए घरों से बाहर निकले। इससे पहले नक्सली बस्तर इलाके में वोटिंग करने पर ग्रामीणों को धमकी देते थे। नक्सलियों ने कई बार पोस्टर जारी कर कहा था कि वोटिंग करने वालों की ऊंगलियों को काट लिया जाएगा जिस कारण से ग्रामीण वोटिंग करने के लिए नहीं निकलते थे। इस बार पंचायत चुनाव में ग्रामीणों ने बड़े उत्साह से साथ वोटिंग की है। हार्डकोर नक्सली इलाकों में वोटिंग के लिए लंबी-लंबी कतारें लगी। हिडमा के गांव में पहली बार वोटिंग छत्तीसगढ़ में तीन चरणों में पंचायत चुनाव के लिए वोटिंग होनी है। यहां सुरक्षाबल के जवानों के कारण लोग वोटिंग करने के लिए घरों से बाहर आ रहे हैं। बस्तर संभाग के 7 नक्सल प्रभावित जिलों में कुल 1855 ग्राम पंचायतें हैं। लोकतंत्र की बुनियादी विजय पताका के फहरे जाने की वजह यह है कि सुरक्षाबल के जवानों ने नक्सलियों के हार्डकोर इलाके में 40 से अधिक कैंप स्थापित कर लिए हैं। जिस कारण से इन इलाकों में नक्सलियों का प्रभाव कम हुआ है। नए कैंप खुलने के बाद नक्सली पीछे हट गए हैं। वहीं, सुरक्षाकर्मी अब जवानों के गढ़ में घुसकर लगातार कार्रवाई कर रहे हैं जिससे नक्सलियों में खौफ व्याप्त है। यही कारण है कि नक्सलियों ने इस बार इसका विरोध नहीं किया है। सुरक्षाबल के जवान नक्सलियों के गढ़ में घुसकर कार्रवाई कर रहे हैं। जिस कारण से वह पंचायत चुनाव का विरोध नहीं कर पाए। इससे पहले नक्सली मजबूत होते थे और हमारे सिस्टम पर हमला करते थे लेकिन अब वह लगातार कमजोर हो रहे हैं। अब वह अपना गढ़ बचाने में लगे हुए हैं।

सुरक्षाबल के कैंप स्थापित होने से जो गांव नक्सलवाद के प्रभाव से मुक्त हो रहे हैं वहां से लोग सबसे पहले आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड बनवा कर सरकार की योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। सरकार की योजनाओं का विस्तार इन इलाकों तक हुआ है। वह मुख्यधारा में जुड़ रहे हैं। पूर्व में सुरक्षा बलों की कार्रवाई सीधे अबूझमाड़ में नहीं होती थी। जिस कारण से नक्सलियों का गढ़ सुरक्षित था और वह इस तरह की हरकतें करते थें। पंचायत चुनाव के विरोध में पोस्टर लगाते थे और ग्रामीणों को धमकियां देते थे। मौजूदा सरकार की रणनीत से सुरक्षाबल के जवान गढ़ को भी घेर रहे हैं और कार्रवाई कर रहे हैं, वहीं गढ़ के आसपास भी नक्सलियों पर हमले हो रहे हैं जिस कारण से नक्सली बैकफुट पर आ गए हैं।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय कहा कि इस बार बस्तर में पंचायत चुनावों का नक्सलियों की ओर से कोई विरोध नहीं किया जाना क्षेत्र में 40 से अधिक नई सुरक्षा कैंपों की स्थापना और सरकार की ओर से ग्रामीणों में विश्वास बहाल करने की रणनीति का परिणाम है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि बस्तर में नक्सलवाद के खात्मे की प्रक्रिया अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के संकल्प के मुताबिक मार्च 2026 तक छत्तीसगढ़ को नक्सलवाद से मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राज्य सरकार बस्तर के नागरिकों को विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं से जोडने के लिए संकल्पित है। बस्तर में सड़कें, पुल, स्कूल, अस्पताल और रोजगार परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे ग्रामीणों का शासन और लोकतंत्र पर विश्वास बढ़ा है। सुरक्षा बलों ने नक्सली आतंक के साए को खत्म करके वोटों के जरिए लोकतंत्र की बुनियाद आतंक प्रभावित क्षेत्रों में रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में भी सुरक्षाबलों ने बीते दिनों 31 नक्सलियों को मार गिराया। साल 2025 में 40 दिनों के अंदर अब तक कुल 81 नक्सलियों का खात्मा किया गया। साल 2024 में 239 नक्सलियों को सुरक्षाबलों ने ढेर किया था, वहीं साल 2023 में 24 नक्सली, 2022 में 305 नक्सली हमले हुए थे, जिसमें 10 जवान शहीद हुए थे और 31 नक्सली ढेर हुए थे। वर्ष 2021 में 48 नक्सली, 2020 में 44 और वर्ष 2019 में 79 नक्सलियों को सुरक्षाबलों ने ढेर किया था। केंद्र और राज्य का लक्ष्य है कि 2026 तक छत्तीसगढ़ को नक्सलियों से मुक्त कराना है। बचे हुए भटके नक्सलियों के पास अब भी मौका है अपनी मांगों को मनवाने के लिए बंदूक की हठधर्मिता का रास्ता छोड़ कर लोकतंत्र के रास्ते विकास का सफर तय करें, अन्यथा सुरक्षा बलों के पास सशस्त्र कार्रवाई करने के अलावा दूसरा विकल्प नहीं होगा।

2 सड़क हादसे में 6 लोगों की मौत

टैंकर ने मोपेड को मारी टक्कर, रायगढ़ में तेज रफ्तार स्कॉर्पियो खड़े ट्रक में घुसी

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। शुक्रवार को 2 बड़े सड़क हादसों में छत्तीसगढ़ के 6 लोगों की मौत हो गई। पेंड्रा में जहां एक मोपेड पर 4 लोग सवार थे जिन्हें रॉन्ग साइड से आ रही टैंकर ने टक्कर मार दी। इसमें 3 लोगों की जान चली गई। वहीं रायगढ़ के 3 लोगों की मौत ओडिशा के बरगढ़ में हुई है। तीनों एक ही परिवार के थे।

पेंड्रा- एक मोपेड में 4 लोग हादसे का शिकार: पेंड्रा में पटियाला हाउस के पास बिलासपुर रोड पर टैंकर ने मोपेड को टक्कर मार दी। इस हादसे में मोपेड सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि एक महिला की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। हादसे में एक और महिला गंभीर रूप से घायल है, जिसे जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है।

बताया जा रहा है कि, एक ही मोपेड पर 2 महिला और 2 पुरुष सवार होकर पेंड्रा की तरफ जा रहे थे। वहीं जिस टैंकर ने टक्कर मारी वह पेट्रोल लोडेड थी और रॉन्ग साइड से आ रही थी। युवकों के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, दोनों युवक कोलबीरा और सोनबचरवार गांव के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

पुलिस हिरासत में टैंकर चालक: पेंड्रा थाना के टीआई जी पी बंजारे ने बताया कि बसंतपुर रोड पर टैंकर और मोपेड की टक्कर की सूचना मिली है। मोपेड पर चार लोग सवार थे। जिसमें दो लोगों की मौत हो गई है। जबकि घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। पुलिस ने टैंकर चालक को हिरासत में ले लिया है। मृतकों की पहचान की कोशिश की जा रही है।

चार दिन पहले भी हुआ था हादसा: इससे चार दिन पहले भी पेंड्रा में एक सड़क हादसा हुआ था। तेज रफ्तार पिकअप ने युवा व्यवसायी अंकित अग्रवाल की बाइक को टक्कर मार दी थी। इस हादसे में अंकित की मौत हो गई थी। उनकी पत्नी हिमानी अग्रवाल का इलाज जारी है।

दूसरा मामला, रायगढ़ के 3 लोगों की गई जान: रायगढ़ के 3 लोगों की जान ओडिशा में एक सड़क हादसे गई। जानकारी के मुताबिक, तमनार थाना इलाके के ग्राम झिकाबहाल गांव का रहने वाला नेमिश बेहरा (35) अपने ससुराल जा रहा था। स्कॉर्पियो में उसके साथ उसकी पत्नी और 2 बच्चे सवार थे। वहीं गाड़ी ड्राइवर चला रहा था।

इसी दौरान दोपहर में ओडिशा के बरगढ़ सोहेला ब्लॉक के सनजोर के रास्ते पर खड़े ट्रक से स्कॉर्पियो पीछे से जा टकराई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि स्कॉर्पियो के आगे का हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। उसमें सवार नेमिश बेहरा की पत्नी, एक बच्चा और ड्राइवर की मौके पर मौत हो गई। वहीं, नेमिश बेहरा और उसकी बेटी गंभीर रूप से घायल हो गए।

करंट लगने में 2 लोगों की मौत

खेत में दवा छिड़काव कर रहे थे, बोर के कटे तार से चिपके

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में करंट लगने से 2 लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि, खेत में दवा छिड़काव करते समय हादसा हुआ है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। घटना पुसौर थाना क्षेत्र के रेंगलपाली गांव की है। जानकारी के मुताबिक, सीताराम सिदार (40) और सुभाष निषाद (55) शनिवार सुबह करीब साढ़े 10 बजे अपने-अपने खेत में दवा छिड़काव कर रहे थे। वहां लगे बोर पंप का तार टूटा था। जिसकी चपेट में आने से सीताराम आकर गिर गया।

बचाने पहुंचा सुभाष भी चिपका: जब बगल के खेत में काम कर रहे सुभाष देखकर बचाने पहुंचा, तो वो भी करंट तार की चपेट में आ गया। जब आसपास के ग्रामीणों को इसकी जानकारी हुई, तो तत्काल दोनों को मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया। जहां शुरुआती जांच के बाद डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

मामले में जांच में जुटी पुलिस: इस मामले में पुसौर थाना प्रभारी रोहित बंजारे ने बताया कि, खेत में काम करने के दौरान करंट लगा है। मामले की सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया। फिलहाल मामले में आगे की जांच की जा रही है।

पहाड़ी के नीचे अधजली लाश मिली, चेहरे,सिर पर चोट के निशान

साड़ी से ढका गया था शव, युवक को मारकर फेंकने की आशंका

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में युवक की अधजली लाश मिली है। युवक के कमर से कंधे तक का हिस्सा जला हुआ है। शव को साड़ी से ढका गया था। मृतक के चेहरे और सिर में पर चोट के निशान भी मिले हैं, जिससे हत्या के बाद पहचान छिपाने शव जलाने की आशंका है। घटना रतनपुर थाना क्षेत्र की है।

शुक्रवार शाम को रतनपुर के छांदीपारा इलाके में पहाड़ी के नीचे से स्थानीय लोग गुजर रहे थे तभी उनकी नजर लाश पर पड़ी। लोगों ने तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। पूछताछ के दौरान युवक की पहचान सूरज खैरवार (30) के रूप में हुई है।

घूम-घूमकर रोजी-मजदूरी करता था युवक: टीआई नरेश चौहान ने बताया कि युवक शुक्रवार की सुबह काम की तलाश में घर से निकला था, जिसके बाद परिजनों को उसके जली हुई लाश मिलने की खबर आ गई। परिजन सहित अन्य लोगों से पूछताछ जारी है। युवक घूम-घूमकर रोजी-मजदूरी करता था।

डॉग स्क्वायड, फॉरेंसिक टीम ने की जांच: मृतक के चेहरे, सिर पर चोट के निशान मिले हैं, ऐसे में पुलिस को आशंका है कि किसी दूसरी जगह युवक की हत्या की गई है, जिसके बाद शव को पहाड़ी के नीचे लाकर फेंका गया है। पुलिस ने मौके पर फोरेंसिक एक्सपर्ट और डाग स्क्वायड को भी बुलाया।

पिकनिक मनाने आया युवक हसदेव नदी में डूबा

3 दोस्तों के साथ देवरी स्पॉट घूमने गया था, नहाते समय तेज बहाव में बहा

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। जांजगीर-चांपा के देवरी पिकनिक स्पॉट पर बनारी गांव से पिकनिक मनाने गए 22 वर्षीय सप्रग्य पांडेय हसदेव नदी में नहाते समय तेज बहाव में बह गया। जिससे उसकी पानी में डूबने से मौत हो गई। रविवार को वह अपने तीन दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने पहुंचा हुआ था।

स्थानीय लोगों ने युवक को बचाने का प्रयास किया। लेकिन सुरक्षा उपकरणों के अभाव में उसे बचाया नहीं जा सका। सूचना मिलने पर गोताखोर और पंतोरा पुलिस मौके पर पहुंची। तब तक गांव के लोगों ने किसी तरह से रेस्क्यू ऑपरेशन कर शव को बरामद किया। पुलिस टीम मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा, जिसके बाद मृतक के शव को परिजनों को सौंप दिया गया।

पिकनिक स्पॉट पर नहीं लगे हैं चेतावनी बोर्ड: देवरी पिकनिक स्पॉट पर यह पहला हादसा नहीं है। यहां पहले भी कई लोग जान गंवा चुके हैं। स्थल पर न तो सुरक्षा गार्ड हैं, न लाइफ जैकेट और न ही कोई बचाव उपकरण। चेतावनी बोर्ड भी नहीं लगे हैं, जिससे लोग खतरनाक क्षेत्रों में चले जाते हैं।

पिकनिक स्पॉट पर लाइफ गार्ड की मांग: स्थानीय लोगों ने प्रशासन से सुरक्षा गार्ड और लाइफ गार्ड की तैनाती की मांग की है। साथ ही, खतरनाक क्षेत्रों में चेतावनी बोर्ड लगाने और आपातकालीन बचाव उपकरणों की व्यवस्था करने की मांग की है। नदी में स्नान के लिए सुरक्षित क्षेत्रों के सीमांकन की भी मांग की गई है। युवक की मौत से परिजन सदमे में है। उन्होंने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रशासन की उदासीनता के कारण यह क्षेत्र मौत का जाल बनता जा रहा है।

देवरी पिकनिक स्पॉट पर पहले भी जान गंवा चुके हैं लोग: यह पहली बार नहीं है जब देवरी पिकनिक स्पॉट पर किसी की जान गई हो। पहले भी कई लोग यहां डूब चुके हैं, लेकिन प्रशासन हमेशा की तरह मूकदर्शक बना हुआ है। सवाल यह है कि क्या इस बार प्रशासन नींद से जागेगा, या फिर यह मामला भी ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा?

हीरे-सोने के गहने लूटकर भागने का वीडिया

घर में मां को बंधक बनाया, बेटे पर रखी नजर, महिला का दोस्त निकला मास्टरमाइंड

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में बेटे पर नजर रखकर घर में अकेली मां को बंधक बनाकर करीब 21 लाख के सोने और हीरे के गहनों की लूट हुई है। भागते समय लुटेरे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए। पुलिस ने 40 किलोमीटर के दायरे में लगे 1000 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली, जिसके बाद 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया। मामला गुढ़ियारी थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक लूट का मास्टर माइंड पीड़ित महिला का दोस्त निकला। आरोपी को सब पता था कि कहां गहने रखे हैं, कहां कैश है। तीनों आरोपियों ने प्लानिंग के साथ लूट को अंजाम दिया।

अब पढ़िए लुटेरों ने कैसे दिया वारदात को अंजाम: दरअसल, 24 फरवरी को टिकेश्वरी रजक ने गुढ़ियारी थाने में शिकायत दर्ज कराई। महिला ने बताया कि वह अपने बेटे के साथ सुखराम नगर गोगांव में रहती है। दोपहर करीब ढाई बजे काम से लौटकर अपने घर पर आराम कर रही थी, तभी 2 नकाबपोश युवक घर के भीतर घुसे।

लुटेरों ने महिला के मुंह को दबाया, फिर हाथ को गमछा से बांधा। उसके बाद में महिला से अलमारी की चाबी मांगी। जब लॉकर की चाबी नहीं मिली तो उसे रॉड से तोड़ दिया। अलमारी में रखे करीब 21 तोला सोना, एक हीरे की अंगूठी और करीब 1 किलो चांदी के गहने बैग में रख लिए। इसके बाद उन्होंने एक रस्सी काटकर महिला के पैर भी बांध दिए। घर के दरवाजे को बाहर से लॉक कर फरार हो गए। महिला ने जैसे-तैसे तकिए के नीचे रखे मोबाइल से कॉल कर मकान मालिक से संपर्क किया और मदद मांगी।

महिला के बेटे की निगरानी करता रहा मास्टरमाइंड: रायपुर एसएसपी डॉ. लाल उम्मेद सिंह ने बताया कि वारदात का मास्टरमाइंड महिला का दोस्त और परिचित सुनील चौहान है। सुनील का अक्सर घर पर आना-जाना होता था। वह जानता था कि किस कमरे में बड़ी मात्रा में सोने-चांदी के गहने और कैश रखे हुए हैं। इसके बाद मास्टर माइंड सुनील चौहान ने अपने रिश्ते के 2 भाई विक्रम सिंह चौहान और तीरेंद्र चौहान के साथ मिलकर 2 महीने पहले लूट की साजिश रची। लूट के 8 दिन पहले तीनों ने घर की रेकी की। महिला घर में अकेली थी। महिला का बेटा आमापारा में बर्फ की दुकान पर था। इसी दौरान विक्रम और तीरेंद्र घर के भीतर घुसे थे। लुटेरों को डर था कि बेटा घर वापस न चला जाए। इसलिए मास्टरमाइंड सुनील चौहान ने वारदात के समय दुकान में बैठे बेटे पर नजर रखी, ताकि वह लोग पकड़े न जाएं।

लूट के बाद आरोपी बाइक से हो गए थे फरार: रायपुर एसएसपी ने बताया कि लूट के बाद आरोपी बाइक से दुर्ग की ओर फरार हो गए थे। पुलिस ने रायपुर से दुर्ग तक 40 किलोमीटर की सड़क और गलियों में करीब 1000 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज को खंगाला। इन्हीं सीसीटीवी फुटेज की मदद से लुटेरों की पहचान हो सकी। आरोपी विक्रम सिंह चौहान अपहरण और तिरेंद्र चौहान मारपीट के मामले में जेल जा चुका है। पुलिस में आरोपियों के पास 21 लाख रुपए का माल बरामद किया है। साथ ही तीनों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से कोर्ट ने आरोपियों को जेल भेज दिया है।

फेसबुक पर दोस्ती, बिलासपुर पहुंचकर युवती से किया रेप

युवती बोली-शादी का वादा किया था, नौकरी लगवाने के लिए 5 लाख भी लिए

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक युवती की फेसबुक के जरिए युवक से दोस्ती हुई, फिर शादी का झांसा देकर रेप किया। अपनी ऊंची पहुंच का हवाला देकर नौकरी लगवाने 5 लाख भी वसूल लिए। अब न पैसे लौटाए न ही शादी कर रहा है। पुलिस केस दर्ज कर आरोपी की तलाश कर रही है। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है।

सिविल लाइन थाना प्रभारी एसआर साहू के मुताबिक, जांजगीर-चांपा जिले में रहने वाली 22 वर्षीय युवती बिलासपुर के निजी संस्थान में काम करती है। 2 साल पहले सारंगढ़ जिले के कोसिर निवासी धनसाय जांगड़े उर्फ विक्रम (26 साल) ने फेसबुक के माध्यम से उससे दोस्ती की।

प्यार में बदली दोस्ती, फिर शादी का वादा कर रेप: इस दौरान दोनों पहले मैसेंजर से बात करने लगे। इसी बीच युवक ने युवती का मोबाइल नंबर ले लिया। फिर फोन पर दोनों बातचीत करने लगे। उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई। युवती का आरोप है कि, विक्रम ने उसे शादी करने का वादा किया। जिसके बाद युवती से मिलने युवक बिलासपुर आ गया। जहां उसके साथ दुष्कर्म किया।

5 लाख रुपए भी वसूले: बातचीत के दौरान उसने अपनी ऊंची पहुंच होने का झांसा दिया। उसने युवती की सरकारी नौकरी लगाने की बात कही। इस बहाने उसने युवती से 5 लाख रुपए भी वसूल लिए। पैसे लेने के बाद युवक का व्यवहार बदल गया। लड़की की नौकरी भी नहीं लगी।

एफआईआर दर्ज, तलाश जारी: जिसके बाद युवती ने उससे पैसे वापस मांगे। लेकिन, युवक ने न तो उससे शादी की और न ही पैसे वापस किए। जिससे परेशान होकर युवती ने 28 फरवरी को पूरे मामले की शिकायत सिविल लाइन थाने में की है। जिस पर पुलिस ने धनसाय जांगड़े उर्फ विक्रम के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। उसकी तलाश की जा रही है।

पहले मारपीट की एफआईआर फिर कहा हुआ गैंग रेप

आरोपों उलझी जामुल पुलिस टीआई ने दर्ज कराया पूरे मुहल्ले का बयान

मीडिया ऑडीटर, भिलाई (एजेंसी)। भिलाई के जामुल थाना में एक ऐसा केस आया, जिसमें जामुल पुलिस उलझ कर रह गई है। दो महिला और उनके परिवार के बीच हुई मारपीट में जामुल पुलिस ने काउंटर अपराध दर्ज किया। एफआईआर दर्ज होने के बाद एक महिला ने उसके साथ गैंगरेप होने का आरोप लगा डाला।

महिला ने आरोप लगाया कि वो जहां रहती है वहां उसके साथ तीन लोगों ने मिलकर सामूहिक दुष्कर्म किया। महिला के इस गंभीर आरोप के बाद जामुल पुलिस इतना परेशान हो गई कि टीआई कपिलदेव पाण्डेय ने तुरंत इसकी पूरी जानकारी अपने उच्चाधिकारियों दी। इसके बाद उन्होंने जहां महिला रहती है उस मोहल्ले के सभी लोगों का बयान दर्ज कराया। बयान में लोगों ने रेप वाली बात को पूरी तरह से झूठ बताया। उन्होंने कहा कि यदि महिला के साथ रेप हुआ होता वो मारपीट की एफआईआर के समय ही सबसे पहले रेप की शिकायत दर्ज कराती, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके बाद उसने दूसेर पक्ष को फंसाने के लिए झूठा आरोप लगाया है।

यह है पूरा मामला: थाना प्रभारी कपिल देव पाण्डेय ने बताया कि घटना 27 फरवरी 2025 की दोपहर की है। जामुल में आम्रपाली अपार्टमेंट के पीछे बॉम्बे आवास निवासी चंपा विश्वकर्मा, पिंकी, रजनी, रवि विश्वकर्मा और महिला व उसके बेटे के साथ झगड़ा हुआ था। दोनों पक्ष मारपीट करने के बाद जामुल थाने शिकायत दर्ज करने पहुंचे थे। पुलिस ने सभी का मुलाहिजा करवाया और उसके बाद दोनों पक्षों के खिलाफ काउंटर अपराध दर्ज किया था।

रिपोर्ट दर्ज कराने के दौरान दोनो पक्षों ने केवल मारपीट का आरोप लगाया और पुलिस ने उन्हीं धाराओं के तहत मामला भी दर्ज किया। इसके बाद महिला इलाज के नाम से अस्पताल में भर्ती हुई और वहां जाकर आरोप लगाया कि उसके साथ गैंग रेप हुआ है। जब ये जानकारी पुलिस के पास आई तो पुलिस के पैर तले जमीन खिसक गई।

रेप केस में फंसाने की देकर गई थी धमकी: टीआई ने बताया जब मोहल्ले के लोगों का बयान दर्ज किया तो उन्होने बताया कि झगड़ा के समय महिला बार बार ये धमकी दे रही थी कि वो सभी को रेप केस में फंसा देगी। उसने थाने में सबके सामने कुछ नहीं बोला, लेकिन बाद में उनको फंसाने के उद्देश्य से झूठा आरोप लगा दिया है।

बोर्ड परीक्षा से 24 घंटे पहले एडमिट कार्ड निरस्त

36 स्टूडेंट्स एग्जाम से वंचित, परिजनों ने मचाया हंगामा, अब प्राइवेट देंगे

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल की 12वीं की बोर्ड परीक्षा आज से शुरू हो रही है। लेकिन बोर्ड ने परीक्षा से 24 घंटे पहले बिलासपुर के 36 छात्रों का एडमिट कार्ड निरस्त कर दिया। जिससे वे नियमित छात्र के तौर पर एग्जाम नहीं दे पाएंगे। तिलक नगर स्थित स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम हायर सेकेंडरी स्कूल के 36 छात्रों का एडमिट कार्ड जारी कर दिया गया था लेकिन 75% से कम अटेंडेंस का हवाला देते हुए बोर्ड ने उनके प्रवेश पत्र को अमान्य कर दिया है।

हालांकि इस घटना के बाद छात्र और उनके परिजनों ने स्कूल पहुंचकर खूब हंगामा किया। मामला उपमुख्यमंत्री अरुण साव तक पहुंचा। एबीवीपी ने अपने ही सरकार के खिलाफ आवाज उठाई। जिसके बाद नतीजा ये निकला कि छात्र नियमित नहीं बल्कि प्राइवेट परीक्षा देंगे।

छात्र और परिजनों ने किया हंगामा: अचानक एग्जाम से वंचित करने पर नाराज छात्र और उनके पैरेंट्स ने शुक्रवार को स्कूल में जमकर हंगामा मचाया। साथ ही उपमुख्यमंत्री अरूण साव से मामले की शिकायत की है। छात्रों का कहना है कि एक हफ्ते पहले उन्हें प्रवेश पत्र जारी किया गया था। जिसके बाद सभी परीक्षा की तैयारी कर रहे थे।

मोबाइल पर परीक्षा से वंचित करने का मैसेज आया: 27 फरवरी की रात करीब 10:30 बजे अचानक उनके मोबाइल पर मैसेज आया कि शार्ट अटेंडेंस के कारण उन्हें परीक्षा से वंचित किया जा रहा है। 28 फरवरी की सुबह 10 बजे बच्चे अपने माता-पिता के साथ तिलक नगर आत्मानंद स्कूल पहुंचे। पता चला कि कम उपस्थिति के चलते बोर्ड ने प्रवेश पत्र अमान्य कर दिया है। जिसके बाद सभी हंगामा मचाने लगे। उस समय उप मुख्यमंत्री अरुण साव शहर में थे, ऐसे में परिजन सीधे उनके पास चले गए। जिला प्रशासन और बोर्ड के अधिकारियों से बातचीत के बाद निर्णय हुआ कि फिलहाल बच्चों को स्वाध्यायी छात्र के रूप में शामिल किया जाएगा।

एबीवीपी ने भी किया प्रदर्शन, जमकर किया हंगामा: पालकों की सूचना पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी पहुंच गए। स्कूल में जमकर हंगामा और नारेबाजी की। लेकिन, स्कूल प्रशासन ने हाथ खड़ा कर दिया। एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने अपने ही सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ भी भिड़ गए।

डिप्टी सीएम के निर्देश पर कलेक्टर ने भेजा प्रतिनिधि: उपमुख्यमंत्री ने कलेक्टर से चर्चा कर पालकों और बच्चों को कलेक्टर के पास भेज दिया। बच्चों के प्रदर्शन और नारेबाजी के बाद कलेक्टर ने अपने प्रतिनिधि अफसरों को चर्चा के लिए भेजा। जिला पंचायत सीईओ संदीप अग्रवाल, अतिरिक्त कलेक्टर शिव कुमार बनर्जी को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इस दौरान अफसरों ने बताया कि छात्रों को प्राइवेट परीक्षा देने की पात्रता होगी। साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि उन्हें परीक्षा में नियमित शामिल करने उचित कार्रवाई की जाएगी।

रोज स्कूल जाते थे - परिजन: परिजनों का कहना है कि बच्चे नियमित स्कूल जाते थे। थोड़ी बहुत उपस्थिति कम हुई थी, इसके लिए विशेष कक्षाएं लगाकर इसकी भरपाई की गई थी। नियमित छात्र के रूप में जब प्रवेश पत्र जारी हो गया तो फिर कैसे 24 घंटे पहले उसे अमान्य किया जा सकता है। बोर्ड को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यदि ऐसा था तो पहले सूचना देनी थी।

प्राचार्य ने कहा - ये बोर्ड का निर्णय: स्कूल की प्राचार्य संयायेगिता सिंह ने कहा कि परीक्षा को लेकर बोर्ड शुरू से ही सख्त था। हमने समय-समय पर पीटीएम और व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए परिजनों को अवगत कराया है। सितंबर से लेकर लगातार जानकारी भेज रहे हैं। न तो बच्चों ने गंभीरता से लिया ओर ना ही परिजनों ने इसे समझा। 31 जनवरी तक उपस्थिति का डेटा मांगा गया था। हमने 8 फरवरी को बोर्ड को भेज दिया। यह उनका निर्णय है, इसमें हम क्या कर सकते हैं। 10वीं कक्षा के भी 10 बच्चे हैं। इन्हे स्वाध्यायी रूप में शामिल होने प्रवेश पत्र भी जारी हो चुका है।

मेडिकल कॉलेज की बंद पड़ी लिफ्ट में मिली लाश

चल रहा था मरीज का इलाज, मानसिक रूप से बीमार था, जांच में जुटी पुलिस

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में डिमरापाल मेडिकल कॉलेज की बंद पड़ी लिफ्ट में एक मरीज की लाश मिली है। बताया जा रहा है कि वह इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज से कहीं चला गया था। परिजन उसे ढूंढ रहे थे। वहीं 8 दिनों के बाद उसकी लाश बरामद की गई है।

मामला जिले के परपा थाना क्षेत्र का है। मौत कैसे हुई है यह अभी स्पष्ट नहीं है। बताया जा रहा है कि यह मानसिक रूप से बीमार था। इलाज के लिए परिजनों ने अस्पताल में भर्ती कराया था।

बिना बताए कही चला गया: जानकारी के मुताबिक, युवक का नाम प्रकाश इजागिरी (40) है। ये बीजापुर जिले के नैमेड इलाके का रहने वाला था। परिजन 16 फरवरी को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज लेकर आए थे। जहां इसे मेल वार्ड में भर्ती किया गया था। वहीं इसका इलाज चल रहा था। 4 दिन बाद 20 फरवरी को वह बिना बताए कही चला गया।

बदबू आई तो खुलवाई लिफ्ट: अस्पताल प्रबंधन और परिजन ने उसे ढूंढने की कोशिश की लेकिन कहीं कोई पता नहीं चला। वहीं पिछले 2 से 3 दिनों से लिफ्ट के पास से काफी बदबू आने लगी थी। जिसके बाद अस्पताल प्रबंधन ने बंद पड़ी लिफ्ट खुलवाई। जब देखा तो नीचे युवक की लाश पड़ी मिली। जिसके बाद शव बरामद किया गया।

जांच में जुटी पुलिस: शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। परपा पुलिस की टीम मामले की जांच कर रही है। युवक बंद लिफ्ट में कैसे गया? कैसे उसकी मौत हुई? फिलहाल यह अभी स्पष्ट नहीं है। पुलिस अस्पताल प्रबंधन से भी पूछताछ कर हल पहलुओं की जांच कर रही है।

भोपाल में केमिकल फैक्ट्री में आग

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में एक केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। आग इतनी भीषण थी कि लपटें 40 फीट तक ऊंची उठी। 10 किलोमीटर दूर से धुआं दिखाई दे रहा था। आग की चपेट में आस-पास की दो फैक्ट्री भी आ गई। दमकलकर्मियों ने 5 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। फैक्ट्री के पिछले हिस्से में बड़ी मात्रा में केमिकल रखा था। जेसीबी की मदद से दीवारों को तोड़ा गया। इसके बाद फोम की मदद से आग को बुझाया जा सका। घटना गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया में शनिवार करीब 1.30 बजे की है। जेके रोड स्थित टाटा और महिंद्रा शोरूम के पीछे यह केमिकल फैक्ट्री है। इसका नाम आनंद आर्गनाइज है। इसके मालिक प्रेम चावला है। यहां थिनर बनाया जाता था। इसके लिए 40 हजार लीटर केमिकल रखा हुआ था।सूचना मिलते ही गोविंदपुरा, पुल बोगदा, फतेहगढ़ से फायर फाइटर्स मौके पर पहुंचे। सीआईएसएफ की टीम भी पहुंची। एसडीईआरएफ की टीम भी पहुंच गई थी। 12 दमकलों की मदद से आग बुझाने की कोशिश शुरू की गई। 50 पानी के टैंकर भी बुलाए गए। इस दौरान कुछ कर्मचारी भी झुलस गए। केमिकल की वजह से भड़की आग के बाद धुआं ही धुआं फैल गया। 10 किमी दूर से धुआं दिखाई दे रहा था। आग लगने के बाद वहां भीड़ लग गई। ट्रैफिक जाम की स्थिति भी बनी। पुलिस ने मौके से लोगों को हटाया। केमिकल से भड़की आग को पहले पानी से ही बुझाया जा रहा था। इससे वह लगातार भभक रही थी। बाद में फायर ब्रिगेड में पानी में फोम मिलाकर आग बुझाई।

तेलंगाना टनल हादसा, 4 लोगों का पता चला

नागरकुर्नूल (एजेंसी)। तेलंगाना के नागरकुर्नूल में निर्माणाधीन श्रीशैलम लेफ्ट बैंक कैनाल टनल का एक हिस्सा 22 फरवरी को ढह गया था। घटना को 7 दिन बीत चुके हैं, लेकिन टनल में अब तक 8 कर्मचारी फंसे हुए हैं। हालांकि राज्य के आबकारी मंत्री कृष्ण राव ने बताया कि रडार में चार लोगों का पता चल गया है। उम्मीद है कि रविवार शाम तक उन्हें बाहर निकाल लिया जाएगा, लेकिन उनके बचने की संभावना बहुत कम है बाकी चार लोगों के बारे में उन्होंने बताया कि उनके टनल बोरिंग मशीन के नीचे फंसे होने का अनुमान है। 450 फीट ऊंची मशीन को काटा जा रहा है। रेस्क्यू ऑपरेशन में 11 एजेंसियां शामिल हैं। 28 फरवरी को साउथ सेंट्रल रेलवे (स्ष्टक्र) की 2 टीमें भी रेस्क्यू के लिए पहुंचीं थी। टीम भारी धातुओं को प्लाज्मा कटर और ब्रॉक कटिंग मशीन जैसे आधुनिक उपकरणों से रास्ते से हटा रही हैं।

पारंपरिक से आधुनिकता की ओर अग्रसर मध्यप्रदेश का टैक्सटाइल उद्योग

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश अपने समृद्ध टैक्सटाइल और परिधान उद्योग के कारण एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में उभर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रदेश की कृषि समृद्धि, पारंपरिक बुनकर समुदायों की उत्कृष्ट कला, आधुनिक औद्योगिक आधार और निवेशक-अनुकूल नीतियाँ राज्य में टैक्सटाइल सेक्टर को सशक्त बना रही हैं। जीआईएस-जीआईएस-भोपाल का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्यप्रदेश को देश की %कॉटन कैपिटल% घोषित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश देश का सबसे बड़ा कपास उत्पादक राज्य है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने राज्य की प्रसिद्ध चंदेरी और माहेश्वरी साड़ियों, बाघ प्रिंट, छीपा हैंड-ब्लॉक प्रिंट और बटिक प्रिंट की प्रशंसा की। उन्होंने यह भी बताया कि

देश के सात बड़े टैक्सटाइल पार्कों में से एक मध्यप्रदेश में स्थापित किया जा रहा है। भोपाल में राज्य सरकार के प्रयासों से देश-विदेश के निवेशकों ने रुचि दिखाई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की है कि मध्यप्रदेश भारत के टैक्सटाइल और एपैरल हब के रूप में स्थापित हो रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट भोपाल में टैक्सटाइल उद्योग में निवेश को बड़े पैमाने पर बढ़ावा मिला। प्रदेश में एमएसएमई क्षेत्र के लिए 21 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव में अधिकांश टैक्सटाइल उद्योग को प्राप्त है। इससे युवाओं के लिये 1.3 लाख से अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। उद्योग और निवेश संवर्धन विभाग के अंतर्गत 8,616 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित हुआ है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में 60 से अधिक बड़ी टैक्सटाइल मिलें संचालित हैं। साथ ही इंदौर के रेडीमेड गारमेंट और अपैरल क्लस्टर में 1,200 से अधिक इकाइयां उत्पादन कर रही हैं।

मध्यप्रदेश के धार जिले में बन रहा पीएम मित्र पार्क देश का सबसे बड़ा टैक्सटाइल पार्क है। इसमें एक लाख से अधिक प्रत्यक्ष और दो लाख से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे। पीएम-मित्र पार्क प्रदेश को टैक्सटाइल उद्योग में नये सिरे से स्थापित करेगा।

मध्यप्रदेश में भारत के 43त्न जैविक कपास का उत्पादन होता है। विश्व में प्रदेश के कपास उत्पादन का योगदान 24त्न है। प्रदेश में कपास का उत्पादन 31 हजार 700 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है। इसलिए इसे कॉटन कैपिटल कहा गया है। मलबरी सिल्क को मिलाकर 200 मीट्रिक टन सिल्क का उत्पादन होता है।

शादी में 10 से ज्यादा लोग नाचें तो दूल्हे समेत गिरफ्तारी, ऐसे कानून हमने हटाए-प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि अंग्रेजों के बनाए एक कानून पर दिल्ली के पॉश इलाके में रहने वाले लोग क्यों खामोश रहे। अंग्रेजों का बनाया ये कानून हमारी सरकार ने हटाया। पीएम ने ये बातें ह्रङ्क्ष के एक कार्यक्रम में कहीं। मोदी ने कहा कि एक कानून था- ड्रामेटिक परफॉर्मेंस एक्ट। ये कानून अंग्रेजों ने 150 साल पहले बनाया था। अंग्रेज चाहते थे कि थिएटर और ड्रामे का इस्तेमाल उनके खिलाफ न हो। इस कानून में प्रावधान था कि सार्वजनिक जगह पर 10 लोग डांस करते मिल जाएं तो उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है। देश के आजाद होने के 75 साल तक यह कानून चलता रहा। यानी शादी के

दौरान 10 लोग डांस कर रहे हों, तो पुलिस उन्हें अरेस्ट कर सकती थी। ये कानून हमारी सरकार ने हटाया। 70 साल तक हमने कानून झेला। मुझे उस समय की सरकारों के बारे में कुछ नहीं कहना, लेकिन मुझे लुटियंस जमात और खान मार्केट गैंग पर आश्चर्य होता है। ये लोग 75 साल तक ऐसे कानून पर चुप क्यों थे। ये लोग जो आए दिन कोर्ट जाते रहते हैं, (जनहित याचिका) के ठेकेदार बने फिरते हैं, वे क्यों चुप थे? तब इन्हें लोगों की स्वतंत्रता का ध्यान नहीं रहता था। पहले बांस काटने पर जेल हो जाती थी। हमारे देश में ऐसा कानून था, जिसमें बांस को पेड़ माना जाता था। पहले की सरकारें ये समझने में नाकाम रहीं कि बांस, पेड़ नहीं होता। हमारी सरकार ने इस कानून को खत्म किया।

26 फरवरी को प्रयागराज में एकता का महाकुंभ संपन्न हुआ। दुनिया हैरान है कि आखिर करोड़ों लोग एक अस्थायी शहर में सिर्फ पवित्र स्नान के लिए कैसे आ सकते हैं?

हिमाचल में बर्फबारी, 600 सड़कें बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश और बर्फबारी जारी है। हिमाचल प्रदेश के ऊंचे क्षेत्रों में 3 दिन से भारी बर्फबारी और निचले इलाकों में बारिश हो रही है। 3 मार्च को फिर से बारिश और बर्फबारी के आसार हैं। वहीं, 5 और 6 मार्च को प्रदेशभर में मौसम पूरी तरह साफ हो जाएगा। स्टेट इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर के मुताबिक प्रदेश में तीन दिन की बर्फबारी से 650 से ज्यादा सड़कें और 2300 से ज्यादा ट्रांसफॉर्मर ठप हो गए हैं। बद्रीनाथ नेशनल हाईवे बंद हो गया। कांगड़ा और कुल्लू जिले में बादल फटने से आई बाढ़ में 10 से ज्यादा गाड़ियां बह गईं। चंबा और मनाली में भी स्कूल-कॉलेज बंद कर दिए गए हैं। हालांकि, सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाएं तय शेड्यूल के हिसाब से होंगी। वहीं,

जम्मू-कश्मीर में 25 से 28 फरवरी के दौरान गुलमर्ग में सबसे ज्यादा 113 सीएम और सोनमर्ग में 75 सीएम बर्फबारी हुई। खराब मौसम की वजह से जम्मू-कश्मीर सरकार ने स्कूलों में विंटर वैकेशन 6 दिनों के लिए बढ़ा दी गई है। इसके अलावा 10वीं से 12वीं तक की 1 और 3 मार्च को होने वाली परीक्षाओं की तारीख आगे बढ़ाई गई हैं। अब ये एग्जाम 24 और 25 मार्च को कराए जाएंगे।

कर्नाटक में सभी उत्पादों पर कन्नड़ लिखना जरूरी, सर्कुलर जारी

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक सरकार ने सरकारी ऑफिस, एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को अनिवार्य करने का आदेश जारी किया है। इस कदम का मकसद प्रशासन, शिक्षा और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को बढ़ावा देना है। सरकार ने इस संबंध में 15 फरवरी 2025 को सर्कुलर जारी किया था। सरकार के मुताबिक यह फैसला कन्नड़ लैंग्वेज कॉम्प्रीहेंसिव डेवलपमेंट एक्ट के तहत लिया गया है। ये 2022 में लागू किया गया था, जो 12 मार्च 2025 से प्रभावी होगा। इसका उद्देश्य

कन्नड़ भाषा का व्यापक विकास और स्थानीय लोगों को बेहतर अवसर देना है। सामानों की पैकेजिंग पर नाम और जानकारी कन्नड़ में छापना अनिवार्य होगा। यह नियम सरकारी और प्राइवेट दोनों संस्थानों के लिए होगा। सरकार ने साफ किया है कि अगर कोई इंस्टीट्यूट या व्यक्ति इन निर्देशों का पालन नहीं करता है, तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। अधिकारियों को इस नियम के सख्ती से पालन की निगरानी करने के आदेश दिए गए हैं। कर्नाटक में लंबे समय से कन्नड़ भाषा के संरक्षण और प्रचार को लेकर आंदोलन होते रहे हैं। हाल ही में बेंगलुरु में दुकानों पर गैर-कन्नड़ नेम प्लेट को लेकर प्रदर्शन हुए थे। इसके अलावा, महाराष्ट्र-कर्नाटक के बीच बस सेवाएं भी रोकनी पड़ी थीं, क्योंकि बसों पर कन्नड़ साइनबोर्ड नहीं लगे थे।

एनकाउंटर में 2 नक्सली ढेर...बड़े नक्सल लीडर्स से मुठभेड़

सुकमा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में जवानों ने 2 नक्सलियों को मार गिराया है। इनमें एक महिला और एक पुरुष नक्सली है। दोनों के शव बरामद कर लिए गए हैं, लेकिन पहचान नहीं हो पाई है। मारे गए नक्सलियों को मिलाकर 2025 में 83 नक्सली ढेर हुए हैं। मामला किस्टाराम थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक शनिवार सुबह से पुलिस और नक्सलियों के बड़े लीडर्स से मुठभेड़ चल रही है। दोनों तरफ से रुक-रुककर फायरिंग हो रही है। बताया जा

रहा है कि किस्टाराम इलाके में कोबरा, डीआरजी और जिला बल के करीब 500 जवानों ने नक्सलियों को घेर रखा है।

इसके पहले जवानों ने बीजापुर में 9 फरवरी को जवानों ने 31 नक्सलियों को मार गिराया था। सभी 31 के शव रिकवर कर लिए गए थे। मुठभेड़ में 2 जवान भी शहीद हुए थे।

दिल्ली में 15 साल पुराने वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में 15 साल और उससे ज्यादा पुराने वाहनों को 31 मार्च से पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाएगा। दिल्ली में बढ़ते एयर पॉल्यूशन को कंट्रोल करने के लिए दिल्ली सरकार ने यह कदम उठाया है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने शनिवार को यह ऐलान किया। उन्होंने कहा, %इस फैसले की जानकारी केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय को जल्द दी जाएगी। हम पेट्रोल पंपों पर गैजेट लगा रहे हैं जो 15 साल से पुराने वाहनों की पहचान करेंगे। ऐसे वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाएगा।

शहर की सभी ऊंची इमारतों, होटलों पर एंटी-स्मॉग गन लगाना कंपल्सरी किया गया है। ये नियम पहले से ही है। अब सख्ती से लागू किया जाएगा। दिल्ली में लगभग 90 प्रतिशत पब्लिक सीएनजी बसों को दिसंबर 2025 तक सिस्टेमेटिक तरीके से हटा दिया जाएगा। इनकी जगह इलेक्ट्रिक बसें चलाई जाएंगी। दिल्ली के ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर पंकज कुमार सिंह ने कहा- मार्च में दिल्ली को एक हजार से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें मिलेंगी। उन्होंने ये भी कहा कि दिल्ली का परिवहन क्षेत्र वर्तमान में 235 करोड़ रुपए के घाटे में चल रहा है।

अमेरिका में दीवार फांदकर घुसा पानीपत का डिलीवरी बॉय

पानीपत (एजेंसी)। पानीपत शहर की मुखीजा कॉलोनी में रहने वाले डिलीवरी बॉय को अमेरिका से जबरन डिपोर्ट कर दिया गया। वह एक महीने पहले 28 जनवरी को दीवार फांदकर अमेरिका में घुसा था। अब उसे वापस भेज दिया गया है। यहां आकर उसने मामले की शिकायत पुलिस को दी है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर दो सगे भाई एजेंटों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया है। मॉडल टाउन थाना पुलिस को दी शिकायत में शुभम ने बताया कि वह मुखीजा कॉलोनी, जाटल रोड का रहने वाला है। वे तीन भाई। सबसे बड़ा वह खुद है। उससे छोटा साहिल व सबसे छोटा सचिन है। जून 2024 में शहर में डिलिवरी ब्वॉय का काम करता था। इस दौरान घर पर दो सगे भाई संदीप व मंदीप निवासी गांव अहर जिला पानीपत आकर मिले। संदीप ने कहा कि वह उसे अमेरिका भिजवा देगा। वहां बहुत पैसा कमा लेगा। वहां काम दिलवाने की भी जिम्मेदारी उनकी ही है। अक्टूबर 2024 में संदीप फिर घर गया। जिसने पासपोर्ट और 6 लाख रुपए ले लिए। 7 अक्टूबर को अमेरिका भेजने के लिए कहा कि सामान लेकर दिल्ली चल, वहां उसकी फ्लाइट है। इस दौरान उसने 2 लाख रुपए और लिए। दिल्ली से वह ब्राजील पहुंचा। इसके बाद संदीप ने वहां उससे 12 लाख रुपए और मांगे। परिजनों को कह कर उसने 12 लाख रुपए और दिलवा दिए। अलग-अलग देशों से होते हुए 28 जनवरी को संदीप ने अमेरिका जाने के लिए उससे दीवार कूदवा दी।

जहां उसे अमेरिका पुलिस ने पकड़ लिया और उसे कैंप में डाल दिया। अमेरिका पुलिस ने गैर कानूनी पाए जाने पर वापस पनामा भेज दिया। वहां से 28 फरवरी को उसे दिल्ली एयरपोर्ट वापस भेज दिया। आरोपियों ने उससे 32 लाख रुपए की धोखाधड़ी कर ली।

मणिपुर में 21 महीने बाद हालात सामान्य होने के आसार

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में 21 महीनों बाद हालात सामान्य होने के आसार हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को राज्य के हालात पर समीक्षा बैठक की। इस दौरान उन्होंने सड़कें ब्लॉक करने वालों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। गृह मंत्री ने 8 मार्च से मणिपुर में सभी सड़कों पर बेरोकटोक आवाजाही सुनिश्चित करने को कहा है। वहीं, अलग-अलग समुदायों ने 20 फरवरी से अब-तक 300 से ज्यादा हथियार सरेंडर किए हैं। राज्यपाल ने 20 फरवरी को अनुरोध किया था कि हिंसा में लूटे गए हथियार सरेंडर कर दें। मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने 9 फरवरी को इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद मणिपुर में 13 फरवरी को राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया था।

हथियार सरेंडर करने की समय सीमा एक हफ्ते और बढ़ी मणिपुर के राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने उग्रवादियों से हथियार सरेंडर करने की समय सीमा 6 मार्च शाम 4 बजे तक बढ़ा दी। हिंसा के दौरान लूटे गए 87 तरह के हथियार, गोला-बारूद और अलग-अलग सामान लोग स्वेच्छा से सरेंडर कर रहे हैं। इंफाल ईस्ट,

बिश्नुपुर, थौबल, कांगपोकपी, जिरीबाम, चुराचांदपुर और इंफाल वेस्ट जिलों में हथियार सरेंडर किए गए हैं। इनमें मैतेई ग्रुप अरम्बाई टेंगोल के सरेंडर किए गए 246 हथियार शामिल हैं।

हिमाचल में 15 दिन में बनेगा कांग्रेस का नया संगठन

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल कांग्रेस प्रभारी रजनी पाटिल ने शिमला में पार्टी नेताओं से दो दिन की बातचीत के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कहा कि 15 दिन के भीतर नया संगठन बना दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि संगठन में सभी वर्गों को तरजीह दी जाएगी, ताकि मजबूत संगठन खड़ा किया जा सके। प्रदेश प्रभारी ने कहा कि हिमाचल में कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाकर 5 साल कांग्रेस और 5 साल बीजेपी सरकार की प्रथा को खत्म किया जाएगा। साल 2027 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस दोबारा सरकार बनाएगी। रजनी पाटिल ने कहा कि हिमाचल में बीजेपी का ऑपरेशन लोटस फेल हुए एक साल हो गया है। बीजेपी को घमंड था कि ऑपरेशन लॉट्स होगा। इसके लिए बीजेपी ईडी, सीबीआई समेत कई तरह के दबाव डालती रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की लड़ाई जारी रहेगी। कांग्रेस राहुल गांधी और सोनिया गांधी के नेतृत्व में लड़ाई लड़ रही है। बीजेपी झूठा प्रचार कर रही है कि हिमाचल कांग्रेस एकजुट नहीं है। उन्होंने दावा किया कि पूरी पार्टी एकजुट है।

प्रदेश सरकार अच्छा काम कर रही है।प्रदेश अध्यक्ष बदलने को लेकर पूछे सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अभी हाईकमान का ऐसा कोई आदेश नहीं हुआ है। वहीं प्रदेश में प्रतिभा सिंह को बदलने जाने की चर्चाएं हैं। इसकी वजह अप्रैल 2025 में उनका तीन साल का कार्यकाल पूरा होना माना जा रहा है। मगर हॉली लॉज समर्थक प्रतिभा सिंह को कंटीन्यू अध्यक्ष के तौर पर देखना चाहते हैं।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि प्रतिभा सिंह को हटाने या फिर पद पर बनाए रखने का फैसला अब रजनी पाटिल की रिपोर्ट पर निर्भर करेगा। पाटिल दो दिन से शिमला में कांग्रेस के नए संगठन को लेकर पार्टी नेताओं से फीडबैक ले रही हैं। कल वह वापस दिल्ली लौटेंगी और हाईकमान को रिपोर्ट सौंपेगी।

भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुकाबले में कैसी होगी दुबई की पिच?

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के ग्रुप-ए में भारत और न्यूजीलैंड की टीमें सेमीफाइनल में अपनी जगह बना चुकी है। वहीं अब इन दोनों टीमों के बीच 2 मार्च को औपचारिक मुकाबला खेला जाएगा। ये भिड़ंत दुबई में होनी है, जहां अब तक एक बार भी किसी टीम का स्कोर 250 रन से ऊपर नहीं गया है। एक तरफ लाहौर में रनों की बारिश हो रही है। दूसरी ओर दुबई में बल्लेबाजों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। बता दें कि, भारत और न्यूजीलैंड में जीतने वाली टीम ग्रुप-ए में पहले स्थान पर फिनिश करेगी।

दुबई की पिच को बहुत धीमा माना जाता है। आमतौर पर यहां स्पिन गेंदबाजों को मदद मिलती है। हालांकि, पिछले दो मैचों में भारत के तेज गेंदबाजों ने यहां 11 विकेट चटकाए हैं। दुबई में खेले गए पिछले 5 वनडे मैच की बात करें तो चार मौकों पर चेज करने वाली टीम विजयी रही है। इस मैदान पर कुल रिकॉर्ड पर नजर डालें तो यहां 22 बार पहले बल्लेबाजी और 36 मौकों पर चेज करने वाली टीम विजयी रही है। पिछले मैचों में तेज गेंदबाजों को नई गेंद से हल्की स्विंग भी मिली है। ऐसे में मोहम्मद शमी भी कहर बरपाते हुए नजर आ सकते हैं।

दुबई मैदान की बात करें तो भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रोहित शर्मा हैं। कप्तान रोहित अब तक इस मैदान पर 7 मैचों में 75.60 के शानदार औसत से 378 रन बना चुके हैं। विराट कोहली इस मैदान पर अब तक 2 ही मैच खेल सके हैं। जिनमें उन्होंने 122 रन बनाए हैं। भारतीय टीम को कभी भी दुबई में किसी वनडे मैच में हार नहीं मिली है।

ऑस्ट्रेलिया-अफगानिस्तान मैच पर बारिश का साया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्रुप ए से आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में सेमीफाइनल में जाने वाली दो टीमों की सीट पहले ही पक्की हो चुकी है। जबकि ग्रुप बी में मामला अभी भी फंसा हुआ है। आज इस ग्रुप में ऑस्ट्रेलिया और अफगानिस्तान के बीच टूर्नामेंट का बेहद अहम मुकाबला होने वाला है, क्योंकि इससे दोनों टीमों की किस्मत तय होनी है। एक तरफ अफगानिस्तान के पास ऑस्ट्रेलिया को हराकर इतिहास रचने का मौका है। वहीं कंगारू टीम भी इसे जीतकर सेमीफाइनल में एंट्री करना चाहेगी। लेकिन लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में होने वाले इस मैच पर बारिश का साया है और रद्द होने की भी संभावना जताई जा रही है।

इस टूर्नामेंट में अब तक ऑस्ट्रेलिया की टीम 2 मैच खेल चुकी है। इस दौरान इंग्लैंड के खिलाफ उसे रोमांचक जीत मिली थी। तो वहीं, साउथ अफ्रीका के खिलाफ दूसरा मैच बारिश की वजह रद्द हो गया था। कंगारू टीम इस तरह 3 अंक हासिल कर चुकी है और पॉइंट्स टेबल में +0.475 के नेट रन रेट के साथ दूसरे नंबर पर है। वहीं बात करें अफगानिस्तान की तो उसे अपने पहले मुकाबले में साउथ अफ्रीका के हाथों करारी शिकस्त मिली थी।

विराट कोहली की नजरें सचिन तेंदुलकर के इस महारिकॉर्ड पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के आखिरी लीग मुकाबले में भारत और न्यूजीलैंड आपस में भिड़ेंगे। भारत पहले ही सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुका है लेकिन वह अजेय रहकर नॉकआउट में जाना चाहेंगे। इस मैच में विराट कोहली पर भी नजरें होंगी। कोहली के पास मौका है कि वह इस मैच में रिकॉर्ड अपने नाम कर सकते हैं। साथ ही सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी के क्लब में शामिल होने का भी मौका होगा।

विराट कोहली को अगर न्यूजीलैंड के खिलाफ मौका मिलता है तो ये उनके करियर का 300वां वनडे मुकाबला होगा। कोहली उन चुनिंदा खिलाड़ियों में शामिल होंगे जिन्होंने भारत के लिए 300 से ज्यादा वनडे मैच खेले हैं। कोहली 300 क्रिकेट मैच खेलने वाले सातवें खिलाड़ी हैं। उनसे पहले सचिन तेंदुलकर, एमएस धोनी, राहुल द्रविड़, मोहम्मद अजहरुद्दीन, सौरव गांगुली और युवराज सिंह ऐसा कर चुके हैं।

विराट कोहली के पास न्यूजीलैंड के खिलाफ 3000 अंतरराष्ट्रीय रन बनाने का मौका है। कोहली अगर दुबई में रविवार को 85 रन बनाते हं तो उनके भी न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 हजार रन पूरे हो जाएंगे। वह भारत के केवल दूसरे ही ऐसे खिलाड़ी होंगे जिन्होंने कीवी टीम के खिलाफ 3 हजार रन बनाए। सचिन ने इस टीम के खिलाड़ी 3345 रन बनाए थे। वहीं रिकी पोंटिंग, जैक कालिस और जो रूट भी इस क्लब में शामिल हैं।

कौन हैं दानिश मालेवर ? जिन्होंने रणजी ट्रॉफी फाइनल में केरल के खिलाफ खेली बेहतरीन पारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदर्भ और केरल के बीच रणजी ट्रॉफी के फाइनल मुकाबले में 21 साल के दानिश मालेवर ने केरल के खिलाफ शतक जड़ा। रणजी ट्रॉफी 2025 का फाइनल मैच 26 फरवरी से शुरू हो गया, जो कि 2 मार्च तक खेला जाएगा। इस मुकाबले में केरल की टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया।

पहले बैटिंग करने आई विदर्भ की टीम की शुरुआत बेहद ही खराब रही। 24 रन के स्कोर तक विदर्भ की टीम को 3 बड़े झटके लगे, लेकिन दानिश मालेवर ने करुण नायर के साथ मिलकर टीम की पारी को संभाला। दानिश ने 168 गेंदों पर शतक जड़ा और विदर्भ की टीम की मैच में वापसी कराई। बता दें कि, दाएं हाथ के बल्लेबाज दानिश मालेवर ने विदर्भ की टीम की पारी को संभालने में अहम भूमिका निभाई। मैच में विदर्भ की टीम ने पहले ओवर की दूसरी गेंद पर पार्थ के रूप में अपना पहला विकेट गंवाया था। फिर ध्रुव शोरे 16 बनाकर पवेलियन लौट गए। इसके बाद मैच में फिर दानिश मालेवर ने करुण नायर के साथ मिलकर 200 रन पार की साझेदारी बनाई। नंबर 4 पर बैटिंग करने उतरे मालेवर और नंबर 5 पर करुण नायर ने लंच से पहले बल्ले से धूम-धड़ाका किया और 100 रन की पार्टनरशिप बनाई।

न्यूजीलैंड के खिलाफ ये बड़ा रिकॉर्ड बना सकते हैं मोहम्मद शमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के पास न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में मौका होगा कि वह एक रिकॉर्ड लिस्ट में अनिल कुंबले को पछाड़ सकते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी में भारत का ग्रुप स्टेज को अंतिम मुकाबला 2 मार्च को न्यूजीलैंड के साथ खेला जाएगा। शमी ने टूर्नामेंट के पहले मैच में बांग्लादेश के खिलाफ 5 विकेट चटकाए थे। उम्मीद है कि वह न्यूजीलैंड के खिलाफ भी बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे।

टीम इंडिया और न्यूजीलैंड चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुकी है लेकिन फिर भी ये मैच सेमीफाइनल के लिहाज से अहम है। दरअसल, इसी मैच के बाद तय होगा कि भारत का मैच सेमीफाइनल में किस टीम के साथ होगा।

न्यूजीलैंड के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज जवागल श्रीनाथ हैं। उनके नाम 51 विकेट हैं। उनके बाद दूसरे नंबर पर 39 विकेटों के साथ अनिल कुंबले हैं। लेकिन इस मैच में 3 विकेट लेकर शमी अनिल कुंबले को पछाड़ सकते हैं।

लिस्ट में तीसरे नंबर पर मोहम्मद शमी हैं, जिनके नाम 37 विकेट हैं। अगर वह 2 मार्च को 2 विकेट लेते हैं तो कुंबले की बराबरी करेंगे और अगर 3 विकेट चटकाते हैं तो कुंबले को पछाड़कर न्यूजीलैंड के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बन जाएंगे। शमी ने बांग्लादेश के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में 5 विकेट लिए थे। हालांकि, पाकिस्तान के खिलाफ दूसरे मैच में वह कोई विकेट नहीं ले सके थे। शमी के वनडे करियर की बात करें तो उन्होंने 105 मैचों में 202 विकेट झटके हैं। भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुकाबला 2 मार्च को दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 2 बजकर 30 मिनट पर शुरू होगा। चैंपियंस ट्रॉफी में भारत अपने सबी मैच इसी ग्राउंड पर खेल रही है। पिछले दोनों मैचों में भारत ने टॉस हारेलेकिन मुकाबला जीता। दोनों मैच भारत ने लक्ष्य का पीछा करते हुए ही जीते हैं।

यूनुस खान ने पाकिस्तान के साथ काम करने से किया था इनकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व पाकिस्तानी खिलाड़ी यूनुस खान इस समय चैंपियंस ट्रॉफी में अफगानिस्तान टीम के साथ मेंटर के रूप में काम कर रहे हैं। पूर्व पाक विकेटकीपर बल्लेबाज ने बताया है कि यूनिस ने पाकिस्तान टीम के साथ टूर्नामेंट में काम करने से मना कर दिया था। साथ ही उन्होंने इसकी वजह भी बताई है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक लतीफ ने कहा कि यूनिस के इस फैसले में पैसा सबसे बड़ी वजह है। उनका मानना है कि पाकिस्तान क्रिकेट में ज्यादा आर्थिक लाभ नहीं है। यूनुस की कप्तानी में पाकिस्तान टीम टी20 वर्ल्ड कप जीत चुकी है। उनको चैंपियंस ट्रॉफी से पहले अफगानिस्तान टीम का मेंटर चुना गया था। यूनुस ने टीम को पाकिस्तान की परिस्थितियों में ढलने में काफी मदद की है। जिसके बाद अफगानिस्तान ने लाहौर में इंग्लैंड को हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। वहीं अब उनके पास चैपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में जगह बनाने का मौका है। ऑस्ट्रेलिया और अफगानिस्तान के बीच शुक्रवार को मैच खेला जाना है। जो भी टीम ये मैच जीतेगी वह सेमीफाइनल में जगह पक्का कर लेगी। यूनुस को मेंटर चुनने के फैसले पर अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड के चीफ एग्जीक्यूटिव नसीब खान ने बताया कि चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन पाकिस्तान में होना था। इसलिए ये जरूरी था कि मेजबान देश से एक अनुभवी और टेलैंटेड खिलाड़ी को टीम का मेंटर चुना जाए।

सचिन बेबी की किस्मत ने दिया धोखा, महज 2 रन से शतक से चूके

नई दिल्ली (एजेंसी)। रणजी ट्रॉफी के फाइनल में विदर्भ और केरल के बीच मुकाबला खेला जा रहा है। इस मुकाबले में केरल के कप्तान सचिन बेबी को उनकी किस्मत ने धोखा दे दिया। दरअसल वह रणजी ट्रॉफी फाइनल में अपने शतक से महज 2 रन से चूक गए। सचिन ने फाइनल में कमाल की पारी खेली लेकिन वह इसे शतक में नहीं बदल पाए।

सचिन बेबी जब आउट हुए तब केरल का स्कोर 7 विकेट पर 324 था। उनकी इस बेहतरीन पारी का अंत पार्थ रेखाडे ने किया। रेखाडे ने सचिन को करूण नायर के हाथों कैच आउट कराया। सचिन बेबी ने 235 गेंदों में 98 रन बनाए, इस पारी में उन्होंने 10 चौके जड़े। केरल की पारी 342 पर खत्म हुई। विदर्भा ने पहली पारी के आधार पर 37 रनों की बढ़त हासिल की है। केरल के लिए इस पारी में सचिन बेबी के अलावा आदित्य सरवटे ने 79 रनों की अहमद पारी खेली। उन्होंने भी इस पारी में 10 चौके जड़े। विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद अजहरुद्दीन ने 34 रन बनाए।

पीसीबी ने जारी किया पाकिस्तान सुपर लीग का शेड्यूल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने पाकिस्तान सुपर लीग का शेड्यूल जारी किया है। जहां 11 अप्रैल सो इस लीग का आगाज हो रहा है। वहीं पाकिस्तान सुपर लीग का फाइनल 18 मई को खेला जाएगा। जबकि आईपीएल का आगाज 22 मार्च से हो रहा है। इस टूर्नामेंट का फाइनल 25 मई को खेला जाएगा। बहरहाल, पाकिस्तान सुपर लीग के पहले मैच में डिफेंडिंग चैंपियन इस्लामाबाद यूनाइटेड के सामने लाहौर कलंदर्स की चुनौती होगी। दोनों टीमें रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में आमने-सामने होंगी। इस सीजन पाकिस्तान सुपर लीग में कुल 30 मुकाबले खेले जाएंगे।

इस सीजन पीएसएल में क्वॉलीफायर, एलिमिनेटर-1 और एलिमिनेटर-2 क्रमशः 13 मई, 14 मई और 16 मई को खेला जाएगा। इससे पहले ग्रुप स्टेज में कुल 30 मुकाबले होंगे। लाहौर के

गद्दाफी स्टेडियम में 18 मई को फाइनल खेला जाएगा। इसके अलावा रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में 11 मुकाबले खेले जाएंगे। जबकि लाहौर का गद्दाफी स्टेडियम 13 मैचों की मेजबानी करेगा। रावलपिंडी और लाहौर के अलावा कराची और मुल्तान में 5-5 मुकाबले खेले जाएंगे। वहीं इस दौरान भारत में आईपीएल का 18वां सीजन खेला जाएगा। आईपीएल का आगाज 22 मार्च से हो रहा है।

इस टूर्नामेंट का फाइनल 25 मई को खेला जाएगा।

पाकिस्तान सुपर लीग के चीफ एक्जीक्यूटीव ऑफिसर सलमान नसीर ने कहा कि हमें पाकिस्तान सुपर लीग के 10वें सीजन का शेड्यूल जारी करते हुए बेहद खुशी हो रही है। पिछले तकरीबन 10 सालों में पाकिस्तान सुपर लीग ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। इस टूर्नामेंट ने पाकिस्तान के कई प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को मंच दिया है। सलमान नसीर ने आगे कहा कि इस सीजन फैंस महज बड़े इंटरनेशनल खिलाड़ियों को ही नहीं देखेंगे बल्कि कराची, मुल्तान, लाहौर और रावलपिंडी में कुल 34 बेहतरीन मुकाबले देख पाएंगे।

चैंपियंस ट्रॉफी के बाद 3 बार आपस में भिड़ेंगी भारत और पाकिस्तान की टीमें

नई दिल्ली। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में कुछ दिन पहले भारत और पाकिस्तान का आमना-सामना हुआ। भारतीय टीम ने पाकिस्तान को आसानी से हरा दिया। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है, लेकिन पाकिस्तान का टूर्नामेंट में सफर समाप्त हो गया है। बहरहाल, क्रिकेट फैंस के जेहन में सवाल है कि अब भारत और पाकिस्तान की टीमें कब आमने-सामने होंगी? जानें यहां पूरी जानकारी।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, एशियन क्रिकेट काउंसिल ने एशिया कप पर मुहर लगा दी है। इस टूर्नामेंट का आयोजन सितंबर में हो सकता है। वहीं एशिया कप की मेजबानी श्रीलंका को मिल सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो एशिया की मेजबानी श्रीलंका और संयुक्त अरब अमीरात को मिल सकती है। साथ ही टूर्नामेंट टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा। ऐसा माना जा रहा है कि एशिया कप में भारत-पाकिस्तान समेत अन्य 8 टीमों को दो ग्रुप में बांटा जाएगा। भारत और पाकिस्तान सेम ग्रुप में होंगे। अगर ऐसा हुआ तो भारत और पाकिस्तान की टीमें टूर्नामेंट में 3 बार आमने-सामने हो सकती हैं। भारत और पाकिस्तान की टीमें ग्रुप मैच के अलावा सुपर-4 राउंड में भिड़ सकती हैं।

इसके अलावा भारत-पाकिस्तान के बीच फाइनल संभव है। अगर ऐसा हुआ तो टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच 3 बार मुकाबला देखने को मिल सकता है। हालांकि, अब तक अधिकारिक तौर पर जानकारी सामने नहीं आई है। एशिया कप के शेड्यूल, मेजबान, फॉर्मेट और टीम के बारे में जल्द अधिकारिक जानकारी सामने आ सकती है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि एशिया कप 2025 की मेजबानी श्रीलंका के अलावा को मिल सकती है।

मैहर के पुलिस आरक्षक की सड़क हादसे में मौत

अज्ञात वाहन की टक्कर से जान गई, बरौंधा पुलिस ने गार्ड ऑफ ऑनर से दी विदाई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के बरौंधा थाने में तैनात पुलिस आरक्षक अनुज सिंह की शुक्रवार रात सड़क हादसे में मौत हो गई। सतना-उचेहरा रोड पर गुढुहा पुल के पास रात करीब 11 बजे अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मौके पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

पार्थिव शरीर पर तिरंगा चढ़ाकर सलामी दी

रविवार को दिवंगत आरक्षक के पार्थिव शरीर को उनके गृह क्षेत्र मैहर लाया गया। बरौंधा पुलिस ने अपने साथी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। पुलिस जवानों ने उनके पार्थिव शरीर पर तिरंगा चढ़ाकर सलामी दी।

पुलिस अधिकारियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पुरानी बस्ती मैहर निवासी आरक्षक अनुज सिंह को उनके घर पर पूरे सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। इस दौरान पुलिस विभाग के अधिकारी और जवान भावुक हो गए।

मुख्तयारगंज आरओबी में बड़ा बदलाव

31 करोड़ के प्रोजेक्ट में चौड़ाई 12 से घटाकर 8.40 मीटर की, जाम की आशंका

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में मुंबई-हावड़ा रेल खंड के मुख्तयारगंज में निर्माणाधीन रेलवे ओवर ब्रिज (आरओबी) के प्रोजेक्ट में बड़ा बदलाव किया गया है। 31 करोड़ की लागत से बन रहे इस पुल की चौड़ाई को 12 मीटर से घटाकर 8.40 मीटर कर दिया गया है।

लोगों ने बताया कि सेतु निगम ने यह बदलाव बिना किसी सार्वजनिक सूचना के किया है। इस कटौती से भविष्य में ट्रैफिक की समस्या बढ़ने की आशंका है। पुल की लंबाई 650 मीटर यथावत रखी गई है। वर्तमान में सिविल लाइन से सर्किट हाउस चौक के बीच 60 साल पुराना आरओबी साढ़े 12 मीटर चौड़ा है। इसमें दोनों तरफ साढ़े तीन मीटर का फुटपाथ भी है। इसकी तुलना में नया पुल काफी संकरा होगा।

चौड़ाई कम करने का कारण स्थानीय भवनों को बचाना बताया जा रहा है। स्थानीय विधायक सिद्धार्थ कुशवाहा ने भी सेतु निगम को पत्र लिखकर चौड़ाई कम करने की बात कही थी। इसके बाद सिविल लाइन एरिया में भी पुल की चौड़ाई 12 मीटर से घटाकर 8.40 मीटर कर दी गई।

संविदाकार संजय शुक्ला के अनुसार, उन्होंने आरओबी की मूल ड्राइंग 12 मीटर चौड़ाई की बनाई थी। लेकिन सेतु निगम ने बाद में इसमें बदलाव कर दिया।

कलेक्टर ने की जल जीवन मिशन और सिंचाई परियोजनाओं की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने शनिवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में विभागीय अधिकारियों की बैठक लेकर जल जीवन मिशन और सिंचाई परियोजनाओं के तहत किये जा रहे कार्यों की जानकारी ली। कलेक्टर ने कार्य की प्रगति संतोषजनक नहीं होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जल निगम तथा पीएचई के अधिकारियों से कहा कि निर्देश दिये जाने के बाद भी एक महीने से अधिक का समय बीत जाने पर कार्य में गति नहीं लाई गई है। एक-दूसरे से जुडे हुए विभागों के आपस में समन्वय बनाकर कार्य नहीं किये जाने से प्रगति धीमी है और काम में विलंब हो रहा है। कलेक्टर ने कहा कि जल निगम और पीएचई के अधिकारी सप्ताह में एक दिन संयुक्त बैठक लेकर समन्वय बनाते हुए अपेक्षित कार्य करना सुनिश्चित करें और मुझे भी जानकारी से अवगत करायें। सोमवार को होने वाली टीएल बैठक में भी इसकी नियमित समीक्षा की जायेगी। बैठक में महाप्रबंधक जल निगम विवेक कुमार, ईपीएचई डीएल कनेल, ई नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण जागृत भगत, सहायक उपयंत्री तथा एलएनटी के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

जीएमएच में सिजेरियन के बाद याददाश्त खो चुकी महिलाओं की हालत स्थिर, परिजन की बढ़ी परेशान

पीड़ित महिलाओं का चिकित्सकों की देखरेख में एसजीएमएच के आईसीयू में चल रहा उपचार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गांधी स्मृति चिकित्सालय के गायनी विभाग में प्रसव के बाद महिलाओं ने अपनी याददाश्त खो दी है, वे अपने परिवार के सदस्यों तक को नहीं पहचान पा रही हैं। इस मामले से चिकित्सक भी हैरान हैं। घटना से अस्पताल में हड़कंप मचा हुआ है। महिलाओं का चिकित्सकों की देखरेख में गहन चिकित्सा इकाई में उपचार चल रहा है, वहीं महिलाओं की हालत में सुधार नहीं होने से परिजन भी परेशान हैं। जबकि अस्पताल प्रबंधन इस मामले को लेकर अब तक किसी भी निर्णय

में नहीं पहुंचा है। बता दें कि रीवा के गांधी स्मृति चिकित्सालय के गायनी विभाग में गुरुवार को पांच महिलाओं का सिजेरियन हुआ था। ऑपरेशन के बाद उनको नॉर्मल वर्ड में शिफ्ट कर दिया गया, लेकिन प्रसूताओं को होश ही नहीं आया। काफी देर तक जब महिलाएं बेहोश रही तो परिजनों की चिंता बढ़ने लगी। कुछ समय बाद महिलाओं को होश आया लेकिन वे अपने परिजनों को नहीं पहचान रही थी और अजीबोगरीब हरकतें कर रही थीं। यह देखकर परिजन घबरा गए और आनन फानन में अस्पताल में स्टाफ को इसकी जानकारी दी।

खबर लगते ही पूरे अस्पताल में हड़कंप मच गया और अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर राहुल मिश्रा सहित अन्य चिकित्सकों ने वर्ड में पहुंचकर पूरे मामले की जानकारी ली। जिस पर उक्त महिलाओं को समुचित उपचार के उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। दो महिलाओं की हालत काफी ज्यादा खराब होने पर उन्हें संजय गांधी अस्पताल के गहन चिकित्सा इकाई में रखा गया है। इधर अस्पताल प्रबंधन का मानना है कि यह असर एनेस्थीसिया दवा के रिएक्शन का हो सकता है। अधीक्षक ने तो बताया कि कभी-कभी किसी का शरीर ज्यादा क्षमता का होता है तो किसी का कम, उन्होंने कहा कि ज्यादा चिंता की बात नहीं है जिस लॉट की दबाव का उपयोग किया गया था उसके उपयोग को बंद कर दिया गया है और जांच कराई जा रही है।

चित्रकूट वन क्षेत्र में सीजन की पहली आग

पिंडरा गांव के खन्तार हार जंगल में आग, वन विभाग की टीम ने पाया काबू

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के चित्रकूट वन परिक्षेत्र में शनिवार को पहली बार जंगल में आग लगने की घटना सामने आई। पिंडरा गांव के खन्तार हार जंगल में दोपहर के समय अचानक आग लग गई।

मझगवां रेंजर पंकज दुबे के अनुसार, दौरी सागर डैम के लिए आरक्षित राजस्व की वन भूमि में आग लगी। पहाड़ी क्षेत्र में चारों तरफ फैली आग पर काबू पाने के लिए वन विभाग की 10 सदस्यीय टीम को भेजा गया। टीम ने मशीन ब्लोवर का उपयोग कर आग पर नियंत्रण पा लिया है। रेंजर ने बताया कि जंगल में आग लगने की घटनाएं आमतौर पर मई-जून के महीनों में अधिक होती हैं। इस साल यह पहली घटना सामने आई है।

शादी का झांसा देकर दो साल तक दुष्कर्म, 25 वर्षीय युवक गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के सभापुर थाना क्षेत्र में एक युवती के साथ शादी का वादा कर दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपी अभिषेक दाहिया (25), निवासी रायपुर कर्चुलियान को गिरफ्तार कर लिया है।

पीड़िता ने शुक्रवार शाम को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसमें उसने आरोप लगाया कि अभिषेक ने पिछले दो वर्षों से शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। जब भी उसने शादी की बात की, आरोपी टालमटोल करता रहा।

सभापुर थाना प्रभारी शंखधर द्विवेदी ने बताया कि पुलिस ने आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 69 के तहत मामला दर्ज कर लिया है और मामले की गहराई से जांच जारी है।

हत्या के आरोपियों की गिरफ्तारी पर अड़े परिजनों ने सड़क पर रखा शव

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के मनगवां थाना क्षेत्र के मनिकवार नंबर दो में एक दिन पूर्व हुई वृद्ध की हत्या के मामले में परिजनों सहित ग्रामीणों ने मनिकवार-मिशिर गवां मार्ग पर शव रखकर चक्का जाम कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आक्रोशित लोगों को समझाइश देने में जुट गई। बतादें कि गुरुवार की देर रात खेत में सिंचाई करने गए 65 वर्षीय हीरामणि वर्मा की धारदार हथियार से हत्या कर दी गई थी। बताया जा रहा है कि मृतक अपने बहू की हत्या का चश्मदीद

गवाह था। परिजनों का आरोप है कि हत्या की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपियों के परिजन और फरार आरोपी लगातार हीरामणि पर केस वापस लेने की धमकी दे रहे थे। इस बात पर कई बार विवाद भी हुआ। जिसकी सूचना संबंधित थाने को दी गई थी, लेकिन पुलिस ने कोई कार्यवाही आरोपियों पर नहीं की गई। परिजनों का आरोप है कि वारदात को उन्हीं लोगों ने अंजाम दिया है जिन्होंने एक वर्ष पूर्व बहू की हत्या कर दी थी। परिजनों ने बताया कि नामजद आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कराए जाने के बावजूद पुलिस उन आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर रही है। इसीका विरोध करते हुए परिजन मृतक के शव को ट्रैक्टर में लेकर ग्रामीणों के साथ मनगवां के समीप नेशनल हाईवे पर प्रदर्शन करने के लिए पहुंच गए। परिजनों की मांग है कि आरोपियों को गिरफ्तार कर मृतक के परिजनों को सुरक्षा दी जाए।

चिकित्सकों ने प्लास्टिक सर्जरी कर जोड़ा कटा हुआ हाथ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला सीधी के ग्राम सलैया निवासी अनिल साकेत उम्र 28 वर्ष का बायाँ हाथ मशीन से लकड़ी काटने के दौरान कलाई से पृथक होगा गया था। मरीज़ को सीधी से चिकित्सा महाविद्यालय रीवा से संबद्ध संजयगांधी स्मृति चिकित्सालय रीवा में 25 फरवरी को 9 बजकर 30 मिनिट में लाया गया, जहाँ वरिष्ठ शल्य चिकित्सकों द्वारा संबंधित कों तुरंत भर्ती कर हाथ को जोड़ने का निर्णय लिया गया। चिकित्सालय में पदस्थ प्लास्टिक सर्जन डाक्टर अजय पाठक व वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम द्वारा संबंधित मरीज़ का सफल आपरेशन किया गया। इस जटिल आपरेशन की प्रक्रिया में तकरीबन 6 घंटे लगे। इस शल्य क्रिया में अस्थि रोग विभाग के डॉ बी.बी. सिंह, निश्चेतना विभाग के डॉ अरविन्द राठिया तथा डॉ आशुतोष का विशेष योगदान रहा। इस जटिल आपरेशन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर चिकित्सालय के संयुक्त संचालक एवं अधीक्षक डॉक्टर राहुल मिश्रा ने पूरी टीम को शुभकामनाएं दी है।

प्रभारी मंत्री हुई सांस्कृतिक एवं सामाजिक लोक नृत्य कार्यक्रम में शामिल

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री तथा मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह अपने प्रवास के दौरान अमदरा मंडल के ग्राम पंचायत विनायका अंतर्गत ग्राम गढ़वा में आयोजित सामाजिक एवं सांस्कृतिक लोक नृत्य कार्यक्रम में शामिल हुई। इस मौके पर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने, स्थानीय जनप्रतिनिधि तथा बडी संख्या में ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री ने किये मां शारदा देवी के दर्शन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने शनिवार को मैहर जिले के प्रवास के दौरान मां शारदा देवी के दर्शन कर पूजा अर्चना की। प्रभारी मंत्री ने प्रदेश वासियों की खुशहाली और समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जिला मूल्यांकन समिति की बैठक 4 मार्च को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना एवं मैहर जिला अंतर्गत वर्ष 2025-26 के लिए अचल संपत्ति का अनंतिम मूल्य निर्धारण किया जाना है। इसके लिए जिला मूल्यांकन समिति से प्राप्त प्रस्तावों पर चर्चा हेतु 4 मार्च को दोपहर 12 बजे से कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई है। कलेक्टर एवं अध्यक्ष जिला मूल्यांकन समिति डॉ. सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विधायक रामपुर बघेलान, सीईओ जिला पंचायत, आयुक्त नगर निगम सतना, जिला वनमण्डल अधिकारी, कार्यपालन अभियंता, लोक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, अध्यक्ष जनपद पंचायत सोहावल, भाडा नियंत्रक अधिकारी, सीईओ गृह निर्माण मण्डल, उप संचालक नगर एवं ग्राम निवेश, महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र तथा अधीक्षक भू-अभिलेख से सुझाव सहित बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

विधानसभा अध्यक्ष 3 को आयेंगे रामपुर बघेलान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर 3 मार्च को सायं 4.15 सतना जिले के रामपुर बघेलान आयेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर सायं 5 बजे रामपुर बघेलान विधायक विक्रम सिंह द्वारा कराई जा रही शिवमहापुराण कथा स्थल दुर्गाजी मंदिर परिसर, थाना के पास रामपुर बघेलान में पहुंचकर शामिल होंगे। इसके बाद तोमर सायं 7 बजे सर्किट हाउस सतना पहुंचकर जनप्रतिनिधियों से भेंट करने के उपरांत रात्रि 8.40 बजे सतना से महाकौशल एक्सप्रेस द्वारा ग्वालियर के लिए प्रस्थान करेंगे।

एफएलसी कार्य में अनुपस्थित रहने वाले 6 अधिकारी-कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला स्थानीय निर्वाचन कार्यालय सतना के ईवीएम मशीनों की जांच (एफएलसी) कार्य में नियुक्त किये गये 6 अधिकारी-कर्मचारियों को कर्तव्य स्थल से अनुपस्थित रहने पर कारण बताओ नोटिस जारी की गई है। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल वानखडे ने कारण बताओ सूचना पत्र का जबाब 24 घंटे के अंदर समक्ष में उपस्थित होकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये हैं। जबाब समय-सीमा प्रस्तुत न करने और समाधानकरण न पाये जाने पर संबंधितों के विरूद्ध एक पक्षीय अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी। इनमें प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क विकास विभाग के उपयंत्री महेंद्र सिंह, लोक निर्माण विभाग सतना के सहायक मानचित्रकर विनोद खरे, जल संसाधन संभाग सतना के भृत्य अमित कुमार वर्मा, लोक निर्माण विभाग के भृत्य लालमन साहू, लोक निर्माण विभाग के स्थाई कर्मी दद्दूलाल दाहिया तथा जल संसाधन संभाग सतना के चौकीदार सुरेश वर्मा के नाम शामिल हैं। ड्यूटी पर अनुपस्थित पाये सभी संबंधितों को जारी नोटिस में कहा गया है कि ईवीएम मशीनों की जांच के कार्य में ड्यूटी लगाई जाकर 27 फरवरी को उपस्थित होने के निर्देश दिये गये थे।

189 जोड़े हुए एक-दूजे के, सामूहिक विवाह सम्मेलन में हुई शादी, राज्यमंत्री बागरी ने कहा-बेटियां अब बोझ नहीं हैं

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया। बीटीआई ग्राउंड में शनिवार को 189 जोड़ों ने सात फेरे लेकर वैवाहिक जीवन की शुरुआत की। कार्यक्रम में गायत्री परिवार के पुरुष और महिला पुरोहितों ने विधि-विधान से विवाह संपन्न कराया। फेरों के लिए 50 हवन कुंड बनाए गए थे। नगरी प्रशासन एवं आवास राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

सम्मेलन में कुल 246 जोड़ों ने आवेदन किया था। जांच के बाद 196 आवेदन पात्र पाए गए। हालांकि अंतिम समय में केवल 189 जोड़े ही

कार्यक्रम में शामिल हुए। सामूहिक निकाह के लिए 4 आवेदन प्राप्त हुए थे। लेकिन अंतिम समय में सभी आवेदन वापस ले लिए गए और एक भी मुस्लिम जोड़ा निकाह के लिए नहीं पहुंचा। राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी ने कहा कि बेटियां अब बोझ नहीं हैं। उन्होंने बताया कि जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, उनकी मदद सरकार कर रही है।

मैहर में हुआ सामूहिक विवाह सम्मेलन

बग्घी में सवार होकर पहुंचे 73 दूल्हे, नवविवाहित जोड़ों को दिए 49 हजार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर में शनिवार को मुख्यमंत्री कन्या विवाह एवं निकाह योजना के तहत सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 73 हिंदू जोड़ों का विवाह और एक मुस्लिम जोड़े का निकाह संपन्न हुआ। कार्यक्रम की सबसे आकर्षक विशेषता दूल्हों की बारात रही। स्थानीय सिंधी धर्मशाला से शुरू हुई बारात में सभी दूल्हे बग्घियों में सवार थे। बारात नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए घंटाघर, चंडी देवी और स्टेट बैंक चौराहा होकर जेल रोड के रास्ते पटेल

मैरिज गार्डन पहुंची।

विवाह स्थल पर प्रभारी मंत्री राधा सिंह और विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने अन्य गणमान्य नागरिकों के साथ दूल्हों का स्वागत किया। सभी विवाह पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ संपन्न हुए। कार्यक्रम के अंत में सरकार की ओर से सभी नवविवाहित जोड़ों को 49 हजार रुपए की अनुदान राशि प्रदान की गई। यह आयोजन सरकारी कार्यक्रमों में अपनी विशिष्टता के लिए चर्चा का विषय रहा।

सामूहिक विवाह कार्यक्रम रामपुर बघेलान और मझगवां में आज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजनान्तर्गत जनपद पंचायत मझगवां में सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन 2 मार्च को मार्कण्डेय पैलेस मझगवां में प्रातः 11 बजे से किया जा रहा है। जनपद सीईओ सुलभ पुषाम ने बताया कि सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 275 वैवाहिक जोडों का नामांकन किया गया है। सांसद गणेश सिंह के मुख्यातिथ्य और विधायक चित्रकूट सुरेन्द्र सिंह गहरवार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, जनपद अध्यक्ष रेणुका जायसवाल, उपाध्यक्ष सुनील पाल और क्षेत्र के जिला पंचायत, जनपद सदस्य विशिष्ट अतिथि रहेंगे।

रामपुर बघेलान का कार्यक्रम स्टेडियम में: मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजनांतर्गत जनपद पंचायत रामपुर बघेलान द्वारा सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन 2 मार्च को लाल चन्द्रकांत स्टेडियम हनुमानगंज रामपुर बघेलान में प्रातः 9 बजे से किया जा रहा है। सांसद गणेश सिंह और विधायक रामपुर बघेलान विक्रम सिंह के मुख्यातिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, जनपद पंचायत अध्यक्ष रावेन्द्र सिंह, उपाध्यक्ष अखिलेश शर्मा और क्षेत्र के जिला पंचायत, जनपद सदस्य विशिष्ट अतिथि रहेंगे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।